सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-12 22 जून से 6 जुलाई, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

संकट का मूल कारण जाने बगैर मुक्ति नहीं मिलेगी

कॉ. रंजीत धर का भाषण

(24 अप्रैल, 2013 को पटना में पार्टी स्थापना दिवस समारोह हुआ। सभा की अध्यक्षता पार्टी के बिहार राज्य सचिव कॉमरेड शिव शंकर ने की। मुख्य वक्ता थे पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. रंजीत धर। उनका भाषण यहाँ प्रकाशित किया गया है।)

आज देश की जो मौजूदा स्थिति है, उससे आप सब भली भाँति वाकिफ हैं। मुझे लगता है, इस पर ज्यादा चर्चा की जरूरत नहीं है। आप सभी जानते हैं कि हमारे रोजमर्रे की जिन्दगी कैसे चल रही है। आपकी दशा कैसी है, देश की दशा कैसी है, समस्याएं कहां तक आ पहुंची हैं-यह सब आप लोग भली-भांति जानते हैं, इसकी विस्तारित चर्चा की कोई जरूरत नहीं है। सरकारों का जो भी परिवर्तन क्यों न कर दिया जाये, मंत्रियों में जो भी हेर-फेर क्यों न कर दिया जाय, चाहे वह बिहार का हो, चाहे बंगाल का या फिर मद्रास का, यहाँ तक कि चाहे केन्द्र सरकार की बात ही क्यों न हो, लोगों की दशा नहीं बदली। बिहार में सरकारें बदली हैं। पहले लालू प्रसाद की सरकार थी। अब नीतीश कुमार की सरकार है। भविष्य में किसकी सरकार होगी- कोई नहीं जानता। केन्द्र में एक समय कांग्रेस थी, बाद में भाजपा आयी। वी पी सिंह प्रधानमंत्री बनें, चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बनें। अलग-अलग पार्टियों के लोग प्रधानमंत्री बने। अलग-अलग पार्टियों के लोग मंत्री बने। लेकिन जनता की हालत नहीं बदली। इसका कारण क्या है? यदि आप इसके मूल कारण को नहीं समझ पाये तो आप अपने हालात में बदलाव नहीं ला सकेंगे। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के स्थापना दिवस 24 अप्रैल पर हम जनता के सामने बार-बार यही सवाल रख रहे हैं। यदि हम हर मामले में मूल कारण को न समझें, इसे समझकर समस्या को हल करने के लिए हम सचेत होकर चेष्टा न कर सके, तो समस्या का समाधान नहीं होगा। इसका समाधान अपने-आप नहीं हो जायेगा।

आप लोग जानते हैं कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ आजादी की लड़ाई में हमारे देश के नौजवानों और आम जनता ने भाग लिया था, कुर्बानी दी थी। नतीजतन देश आजाद हुआ। यह बात तो सही है। उस समय भी देश सर्वहारा और पूंजीपति वर्ग इन दो हिस्सों में बंटा हुआ था। हमारे देश का पूँजीपति वर्ग चाहता था कि ब्रिटिश हुकूमत देश से चली जाय और राजसत्ता उसके हाथ में आ जाये। यह व्यवस्था इनके हाथ में आ जाने से वे अपना शोषण चला पायेंगे। इसी मकसद से वे आजादी की लड़ाई में शामिल हुए थे। दूसरी तरफ, हमारे देश का आम आदमी, शोषित-पीड़ित सर्वहारा वर्ग शोषण-जुल्म से मुक्ति चाहता था। वे इन्सान की तरह जीने का मौका चाहते थे। वास्तव में क्या हुआ? जिस कांग्रेस के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई लड़ी गई उसकी बागडोर टाटा-बिड़ला के हाथों में, पूँजीपतियों के हाथों में थी। पूँजीपतियों के हाथ में नेतृत्व रहने की वजह से समझौते के जरिये आजादी मिली। अंग्रेजों ने जब देखा कि इस देश में उनके शोषण-शासन को कायम रखना सम्भव नहीं हो रहा है तब उन्होंने पूँजीपति वर्ग के संगठन कांग्रेस के हाथों में सत्ता का हस्तांतरण किया और यहां से चले गये। इस प्रकार देश में पूँजीवादी शासन-शोषणमूलक व्यवस्था कायम हुई।

उसी के जरिये आज समाज में शोषण जारी है। सर्वहारा वर्ग, शोषित वर्ग, आजादी के पहले भी जिस तरह शोषण का शिकार था, आजादी के बाद भी वह शोषित ही रहा। हमारे देश के इतिहास को अगर हम देखें तो पायेंगे कि हमारे देश की समस्याओं का मूल कारण यह राजसत्ता है। पूँजीपति वर्ग अपने स्वार्थ में राजसत्ता का संचालन कर रहा है। और, इसी वजह से हम देख रहे हैं कि हर साल आर्थिक संकट विकराल रूप धारण करता जा रहा है। सिर्फ अपने देश में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में यही हाल है। दुनिया का सबसे अमीर देश अमेरिका इस संकट में डूबा हुआ है। एक समय जो अंग्रेज हमारे देश पर शासन किया करते थे, वे भी आज संकटों से घिरे हुए हैं। फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, रूस, जापान-दुनिया में आज कोई भी ऐसा पूँजीवादी देश नहीं है, जो गहरे संकट में डूबा न हो। इस संकट का कारण क्या है?

(शेष पृष्ठ 2 पर)

मिड डे मील वर्कर्रों का रोष प्रदर्शन

भिवानी (हरियाणा) : मिड डे मील कार्यकर्ताओं ने 7000 रुपये मासिक मानदेय देने, सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, हाजिरी रजिस्टर लगाने, छुट्टियों के पैसे न काटने, सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया जाने और भविष्य निधि, पेन्शन, जीवन बीमा आदि सभी सुविधाएं प्रदान करने, साल में कम से कम दो वर्दियां देने, बीमार पड़ने पर सवेतन अवकाश और मृत्यु या दुर्घटना होने पर मुआवजा देने, हर जगह रसोई घर में सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध और गैस सिलेण्डरों व अन्य जरूरी सामानों का

(शेष पृष्ठ 6 पर)

अनुबंधित कर्मियों ने ज्ञापन सौंपा

दिल्ली : विभाग में लगाये जाने के दिन से सभी नर्सों व पैरामेडिकल कर्मचारियों को पक्का करने, तब तक अनुबंधित कर्मचारियों की सेवा जारी रखने व बाहर से इन पदों को न भरने और जरूरत के अनुसार नये पद सृजित करने आदि मांगों को लेकर 3 जून को दिल्ली सरकार के कन्ट्रैक्टच्युएल वर्कर्स का एक प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित से मिला और उन्हें अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व ऑल इण्डिया यूटीयूसी के राज्य अध्यक्ष और यूनियन के संयोजक कॉमरेड हरीश त्यागी ने किया। उनके अलावा अजय कुमार, संजय, आसिम, विजय आदि भी इसमें शामिल थे। यह प्रतिनिधि मण्डल 4 जून को स्वास्थ्य मंत्री डा. अशोक वालिया से भी मिला।

कॉ. रंजीत धर का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

हम जिस समाज में रहते हैं, वह शुरू से ही ऐसा नहीं था। वह परिवर्तित होते-होते यहां तक आया है। यह समाज भी एक जगह टिका हुआ नहीं रहेगा। यह इतिहास है, यह विज्ञान है। समाज परिवर्तित होता रहता है। समाज में जो उत्पादन होता है, उसी से तो लोगों की आवश्यकताएं पूरी होती हैं। यह उत्पादन एक नियम के आधार पर होता है। जिस नियम के आधार पर उत्पादन होता है, वह नियम चलते-चलते आगे चलकर अकारगर हो जाता है। उसके आधार पर और वृहतर उत्पादन नहीं हो सकता। उस समय नये नियम की आवश्यकता होती है। तब नये नियम के आधार पर उत्पादन होने लगता है।

उत्पादन करने के मकसद से ही आदमी एकत्रित हुए। जिंदा रहने की गरज से आदमी ने समाज बनाया। आदमी की आवश्यकताएं दिन पर दिन बढ़ती जाती हैं। उसकी संख्या लगातार बढ़ती जाती है। उसकी जीवन-शैली में भी विकास हो जाता है। आदमी की आवश्यकताएं बढ़ती जाती हैं। पुराने नियम से आवश्यक उत्पादन नहीं बढ़ पाता, लोगों की आावश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं। इसलिए उस नियम को, उस पद्धति को परिवर्तित करने की जरूरत पड़ती है। इस नियम के परिवर्तन के साथ-साथ समाज भी परिवर्तित हो जाता है। आदमी आदमी के बीच उत्पादन संबंध भी बदल जाते हैं। इस तरह से हम नई समाज व्यवस्था में प्रवेश कर जाते हैं। आदमी के जीवन में व्यक्तिगत संबंध, पारिवारिक संबधं, रूचि-संस्कृति, नीति-नैतिकता, मूल्यबोध–हर क्षेत्र में परिवर्तन दिखाई देता है। इसलिए परिवर्तन समाज का, दुनिया का नियम है। जैस हमारे देश में सांमतवाद-राजतंत्र को उखाड़ फेंककर पूँजीवादी शासन आया।

पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन का उद्देश्य होता है पूँजीपतियों का मुनाफा। समाज में आज कितने लोग भूखे हैं, कितने लोग नंगे हैं लेकिन पूँजीवाद में लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन नहीं होता है। पूँजीवाद में उत्पादन मुनाफे के उद्देश्य से होता है। निजी मालिक कल-कारखाने खोलकर अपने मुनाफे के लिए उत्पादन करता है। वह उन्हीं चीजों का उत्पादन करता है जिन्हें बेच कर उसे मुनाफा होता है। हमारे देश में इसी नियम के आधार पर उत्पादन होता है। पूँजीवादी व्यवस्था आने के बाद विज्ञान के क्षेत्र में, जीवन स्तर के क्षेत्र में बड़ा भारी विकास हुआ था। लेकिन वही व्यवस्था चलते-चलते एक समय आने पर अपनी प्रगतिशीलता गवां बैठती है। आज वह घोर संकट में डूबी हुई है। आज से लगभग सौ साल पहले वह संकटग्रस्त हो गई थी। इस संबंध में लेनिन ने कहा था कि यह युग साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति का युग है। पूंजीवाद साम्राज्यवाद के स्तर पर पहुंच गया है। पूँजीवाद में अब और विकास की गुंजाइश नहीं है। पूँजीवाद प्रतिक्रियाशील हो गया है। पूंजीवादी संकट की वजह से ही 1914 में पहला विश्व युद्ध हुआ था। 1939-40 में दूसरा विश्व युद्ध भी पूँजीवाद के दूसरे घोर संकट की वजह से हुआ था। इसी वजह से इस देश में आप जिन सब समस्याओं से रूबरू हो रहे है, पूँजीवाद में उन समस्याओं का समाधान अब सम्भव नहीं है। जब तक इस पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था को हटाकर समाजवादी उत्पादन व्यवस्था स्थापित नहीं की जाएगी, तब तक हमारी समस्याओं का समाधान नहीं होगा।

हमारे देश में बड़ी धूम-धाम से चुनाव हो रहे हैं। चुनावों में कौन जीतेगा, कौन हारेगा–इसको लेकर पूरे देश में उन्माद का सा माहौल तैयार हो जाता है। लेकिन चुनाव के पहले जानता की जो हालत थी, चुनाव के बाद भी वही रहती है। 1947 में आजादी मिलने के बाद 65 साल गुजर गये–जनता की हालत आज उससे भी बदतर हो गयी है। आजादी के समय जिस टाटा-बिड़ला की पूँजी चार-पाँच सौ करोड़ रुपये थी, उनकी पूँजी आज लाखों लाख करोड़ रुपये हो गई है। आज भारत के पूँजीपति इथोपिया में जमीन खरीद रहे हैं, ब्रिटेन में कारखाने खरीद रहे हैं। लक्ष्मी मित्तल दुनिया में सबसे बड़े इस्पात उद्योग का मालिक है। आज दुनिया के 10 सबसे बड़े अमीरों में 4 भारत के ही हैं।

दूसरी तरफ, आज जनता की हालत क्या है? 70 प्रतिशत जनता गरीबी रेखा के नीचे है। उन्हें दो वक्त भोजन नहीं मिलता है। उनकी रोजाना खर्च करने की क्षमता 20 रुपये से कम है, उन्हें दो वक्त खाने को भोजन नहीं जुटता है। आज गांव की हालत क्या है? गांव में काम नहीं है। काम की तलाश में बिहार के खेतिहर मजदूर हरियाणा, पंजाब जैसे दूर दराज के प्रांतों में जाने को बाध्य हो रहे हैं। उनके परिवार खत्म हो रहे हैं, घर खत्म हो रहे हैं। गरीब किसान जो फसल उगाता है, उसे उसका उचित मूल्य नहीं मिलता। जमीन, बीज, खाद सब कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हाथों में चला गया है। पहले गांव-कस्बे-बाजार में गरीब लोग दुकान खोलकर जो छोटा-मोटा सामान बेच कर परिवार पाल लेते थे। उस खुदरा व्यापार को भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा कब्जे में लिया जा रहा है।

पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपतियों के लाभ के लिए उत्पादन होता है। लाभ कम होने पर बैंक से पूँजीपतियों को हजारों करोड़ रुपये का कर्ज मिलता है, जिसे वे लौटाते नहीं हैं। सरकार उन्हें जनता से वसूले टैक्सों से बने सरकारी कोष से लाखों लाख करोड़ रुपये के राहत पैकेज देती है। जबकि इस पैसे से शिक्षा, इलाज, बिजली, पीने के शुद्ध पानी की व्यवस्था करना सरकार की जवाबदेही बनती है। लेकिन सरकार ये सब तो मुहैया कराती ही नहीं, उल्टे इन सब सेवा क्षेत्रों को आज निजी मालिकों को सौंप दिया है मुनाफा कमाने के लिए। इसलिए मैं कह रहा था पूंजीवाद रहेगा, तो संकट से निजात नहीं मिलेगी। यह पूँजीवादी सरकार, पूँजीवादी राज्यसत्ता पूँजीपतियों की ही हित साधक है। पूँजीपति वर्ग हमारे देश में दो दलीय संसदीय प्रणाली चालू करना चाहता है। जनता अगर पूँजीपतियों की बड़ी पार्टी कांग्रेस को पसन्द न करे तो दूसरी बड़ी पूँजीवादी पार्टी बीजेपी को ले आता है। इस तरह पूँजीपति वर्ग अपने वर्ग स्वार्थ को बचाये रखता है।

भारत बहुत बड़ा देश है। यहाँ अनेक प्रांत हैं, अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं, बहुत सारे धर्मों और रीति-रिवाजों को मानने वाले लोग हैं। हमारे देश में क्षेत्रीय पूँजी है और एकाधिकार राष्ट्रीय पूँजी है। क्षेत्रीय पूँजी का एकाधिकार राष्ट्रीय पूँजी के साथ द्वंद्व भी है और गठजोड़ भी। इसका प्रतिफलन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के आपसी द्वन्द्व और गठबंधन में देखने को मिलता है। नीतीश कुमारजी सर्वभारतीय पैमाने पर एनडीए में भाजपा के साथ हैं लेकिन अपने राज्य में नरेन्द्र मोदी के साथ एकता नहीं करना चाहते हैं। कैसी राजनीति है? नरेन्द्र मोदी गुजरात में सम्प्रदायिक दंगे करवाकर और अल्पसंख्यकों का व्यापक पैमाने पर नरसंहार करवाकर हिन्दुत्ववादी राजनीति के सहारे सत्ता में आये। यह बात सारे देश की जनता जानती है। देश की जनता जनती है कि नरेन्द्र मोदी गुजरात की सत्ता में कैसे आये हैं। उसी नरेन्द्र मोदी के साथ अगर नीतीश कुमार गठजोड़ में जाते हैं, तो बिहार के मुस्लिम सम्प्रदाय का वोट उन्हें नहीं मिलेगा। बंगाल में ममता भी एक समय भाजपा के साथ थी। अब उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि, ऐसा करने से उन्हें अल्पसंख्यकों के वोट नहीं मिलेंगे। यह चालाकी की राजनीति है। यह चालाकी इसलिए चल पा रही है कि देश के लोग गहराई के साथ राजनीति की चर्चा नहीं करते, राजनीति को ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं।

टीवी, अखबार का नियंत्रण पूँजीपति वर्ग करता है। पूँजीपति वर्ग अपने हित में अखबार में जो बातें छापता है, टीवी में जिन चीजों को दिखाता है, उसी को पढ़कर-देखकर आम जनता अपनी राय बनाती है। पूँजीपतियों की ओर से, पूँजीपतियों की ताबेदार पार्टियों की ओर से जनता के प्रति यह झांसेबाजी, यह बेईमानी तब तक चलती रहेगी, जब तक कि सर्वहारा वर्ग की सही पार्टी उपयुक्त ताकत हासिल नहीं कर लेती, जिस पार्टी की सहायता से सर्वहारा वर्ग पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंक दे सके।

हमारे देश में सीपीआई, सीपीआई(एम), नक्सलपंथियों के तमाम धड़े, आरएसपी, फॉरवर्ड ब्लॉक आदि मार्क्सवाद का नाम लेकर चलने वाली अनेक पार्टियाँ हैं। लेकिन मार्क्सवाद का नाम लेने से ही कोई सही मार्क्सवादी पार्टी नहीं हो जाती। पूँजीपति वर्ग अपना शोषण बरकरार रखने के लिए जिस पार्टी का गठन करता है, जिस कायदे से और जिस पद्धति से पार्टी का गठन करता है, और सर्वहारा वर्ग शोषण का खात्मा करने के लिए जिस पार्टी का गठन करता है उसकी प्रक्रिया अलग तरह की, लड़ाई अलग तरह की और नियम-कायदा अलग तरह का होगा। उस संघर्ष, उस नियम के आधार पर अगर सर्वहारा वर्ग की पार्टी का गठन न किया जाए, तो क्रांति नहीं होगी। मार्क्सवाद के नाम पर हमारे देश में जितनी पार्टियां हैं, इसमें से कोई भी पार्टी सर्वहारा वर्ग की पार्टी निर्माण की सही प्रक्रिया से नहीं बनी है। मार्क्सवाद के आधार पर सही तरीके से संघर्ष करके देश में एकमात्र शिवदास घोष ने एसयूसीआई(सी)पार्टी का निर्माण किया है।

आज देश के हालात क्या हैं? मंहगाई आकाश छू रही है। कल-कारखानों में मजदूरों की ठेके पर नियुक्ति हो रही है। स्थायी नियुक्ति नहीं हो रही है। मंहगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है, लेकिन मजदूरी में बढ़ोतरी नहीं हो रही है। समस्याएं दिन पर दिन घनघोर होती जा रही है लेकिन उनके समाधान की माँग के लिए देश भर में कोई आन्दोलन नहीं हो रहा है। आज मार्क्सवादी नामधारी बड़ी-बड़ी पार्टियाँ हैं, पार्लियामेंट में उनके अनेक सदस्य हैं लेकिन कहीं भी उनका आंदोलन नहीं है। ये सभी पार्टियाँ आज पूँजीपतियों की हितों की रक्षा में जुटी हुई हैं। आज इनका असली चरित्र उजागर हो गया है। लेकिन कॉ शिवदास घोष ने बहुत पहले ही इनके चरित्र को पहचान लिया था।

नई पीढ़ी के नेता-कार्यकर्ता शायद नहीं जानते, लेकिन पुराने लोग जानते हैं कि किन कठिन परिस्थितियों में कॉ. शिवदास घोष ने एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) का निर्माण किया था। कुछ भी नहीं था। न रहने की जगह थी और न खाने का कोई जुगाड़। कोई विश्वास नहीं कर पाता था कि यह पार्टी कभी आगे बढ़ेगी। इतना बड़ा देश और इतनी बड़ी-बड़ी पार्टियाँ मौजूद थी। लोग कॉ. शिवदास घोष से कहा करते थे कि देश में लोग आपको जानते-पहचानते नहीं, आप कैसे पार्टी बनायेंगे? कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि अगर और कुछ न भी कर पाया तो लोगों को कम से कम एक सही रास्ता तो दिखा जाऊंगा। अगर यही सच है कि क्रांतिकारी पार्टी के बगैर क्रांति संभव नहीं होगी, सर्वहारा वर्ग की क्रांति के बिना शोषण से मुक्ति मिलनी संभव नहीं है और सर्वहारा क्रांति बगैर सर्वहारा वर्ग की पार्टी के नहीं होगी–तो मैं उसी सत्य के रास्ते पर चलूंगा। अगर देश में कोई सर्वहारा वर्ग की पार्टी नहीं है, तो वह पार्टी बनानी ही होगी। यही प्रतिज्ञा लेकर कॉमरेड शिवदास घोष ने सर्वहारा वर्ग की यह पार्टी बनायी थी। आज वह पार्टी देश के कोने-कोने में फैल गयी है। लेकिन वह उतनी ताकत अभी भी हासिल नहीं कर पायी है, जिसके बल पर हम पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंक सकें। पूँजीवादी राजसत्ता अपने सैन्य बजट में लगातार बढ़ोतरी कर रही है। जन आन्दोलन और क्रान्ति को रोकने के लिए वे ऐसा कर रहे हैं। कायदे-कानूनों को और सख्त बनाया जा रहा है ताकि आंदोलन का, क्रांति का दमन किया जा सके। राजसत्ता पर बैठा भारत का पूँजीपति वर्ग अपने खतरे को भांप रहा है। जनता में असंतोष दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अगर विक्षुब्ध जनता को सही नेतृत्व मिल जाये, तो राजसत्ता पूँजीपति वर्ग के हाथ से निकल जायेगी।

हमारे देश में मार्क्सवादी या वामपंथी नामधारी जितनी भी पार्टियाँ हैं, आज उनमें से कोई भी आंदोलन के मैदान में नहीं है। ये लोग आज कांग्रेस, भाजपा, जदयू, राजद, सपा, बसपा के साथ गठजोड़ कर संसद या विधान सभा में एक या दो सीट पाने की फिराक में हैं। चाहे सीपीआई हो या सीपीआई (एम)–सभी तथाकथित वामपंथी पार्टियां इसी जुगाड़ में लगी हुई हैं। सीपीआई, सीपीआई (एम), आरएसपी, फारवर्ड ब्लॉक की आज फिर कांग्रेस से घनिष्टता बढ़ रही है। क्योंकि इनके लिए

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पूँजीवाद महज आर्थिक शोषण ही नहीं, इन्सानियत को भी खत्म कर रहा है

गुवाहाटी की जनसभा में कॉमरेड असित भट्टाचार्य

24 अप्रैल को एसयूसीआई(सी) के 65वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में गुवाहाटी की जिला लाइब्रेरी के प्रेक्षागृह में एक सभा आयोजित हुई। पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य प्रसिद्ध जननेता कॉमरेड असित भट्टाचार्य मुख्य वक्ता थे। सभा की अध्यक्षता पार्टी के आसाम राज्य कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड भूपेश नाथ ककाति ने की। शुरू में पार्टी की राज्य कमेटी की सचिव कॉमरेड चन्द्रलेखा दास ने पार्टी स्थापना वर्षगांठ के तात्पर्य और महत्व की व्याख्या करते हुए अपनी बात रखी। पार्टी स्थापना दिवस मनाने के अन्तर्निहित महत्व पर रोशनी डालते हुए कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा कि इस ऐतिहासिक महत्वपूर्ण दिन पर क्रान्तिकारी दृष्टिकोण के आधार पर ताजा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का सही-सही विश्लेषण जनता के सामने रखना और उसी परिप्रेक्ष्य में कर्त्तव्य निर्धारित करना भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन्होंने कहा कि इस दिन हम भारत में पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति जल्दी से सम्पन्न करने के उद्देश्य से अपना संघर्ष और भी तेज करने का संकल्प लेते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि विश्व की पूँजीवादी अर्थव्यवस्था आज भयावह संकट में डूबी हुई है। इसकी व्यापकता और गहनता इतनी ज्यादा है कि इसे सन 1930 की इतिहास में प्रसिद्ध महामन्दी से कम समझने की कोई वजह नहीं है। अमेरिका, यूरोप के विभिन्न अग्रणी पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देश–ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इटली–जिन्होंने एक समय विभिन्न देशों में औपनिवेशिक शासन-शोषण चला कर अपनी-अपनी पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाओं को समृद्ध किया था, इस मन्दी की गिरफ्त में फंस कर आज थर-थर कांप रहे हैं। उन्हें इस संकट से बाहर निकलने का रास्ता नजर नहीं आ रहा है। वहाँ के कल-कारखाने बन्द होते जा रहे हैं, हजारों-हजार मजदूरों की नौकरियाँ छिन रही हैं। उन्होंने कहा कि जिस अमेरिका-यूरोप में 15-20 साल पहले प्रतिवाद, जलसे-जुलूस का रिवाज नहीं था, आज वहाँ भी राजपथ पर प्रतिवाद-जलसे-जुलूस रोजमर्रे की घटनाएं हो गई हैं। सिर्फ प्रतिवाद ही नहीं, बल्कि सड़कों पर पुलिस, सशस्त्र बलों के साथ लड़ाई लड़ी जा रही है। अमेरिका की सरकार शिक्षा, स्वास्थ्य, गृहनिर्माण, आदि जनहितमूलक मदों में पहले जितना बजट खर्च किया करती थी, अब कर्ज चुकाने की देनदारी की वजह से खर्च में कटौती करने के बहाने इन सभी क्षेत्रों में बजट आबंटन में कटौती की जा रही है। अपनी खुद की आमदनी से सरकार चल नहीं पा रही है, मजदूर-कर्मचारियों का वेतन समय पर नहीं दे पा रही है। नतीजतन देश चलाने के लिए कर्ज पर कर्ज लेना पड़ रहा है। जो अमेरिका दुनिया के विभिन्न देशों का कर्जदाता था आज वही दुनिया का सबसे ज्यादा कर्जवान देश है। यूरोप का हाल भी ऐसा ही है। यूरोप के विभिन्न देश जो एक समय दुनिया के ताकतवर पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में गिने जाते थे उनकी अर्थव्यवस्था भी ताश के पत्तों के घर की तरह ढहती जा रही है। एक पर एक देश दिवालिया होते जा रहे हैं।

भारत की अवस्था भी अत्यंत सोचनीय है। घोर गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई की समस्या से आम आदमी परेशान है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में 'जॉब लैस ग्रोथ' (रोजगार रहित विकास) की बात चालू हो गई है। इसका मतलब क्या है? विकास का मायने है जनता के जीवन स्तर, आजीविका का विकास। अगर काम ही न रहे तो विकास कैसे होगा? नतीजनत यह पूँजीवादियों की गढ़ी गई एक स्वविरोधी बात है। पूँजीपतियों ने ही शोषण करके जनता की खरीद शक्ति या असल आमदनी को लगभग सिफर पर ला दिया है। जरूरत की चीजें खरीदने की क्षमता जनता की नहीं है। इसलिए उत्पादित माल बाजार में बिक नहीं रहे हैं। नतीजतन उद्योगपति उत्पादन घटा रहे हैं। इस अवस्था में पूँजीपति सट्टेबाजी, भ्रष्टाचार का सहारा ले रहे हैं। बहुत से लोगों को याद होगा कि सन 2008 में अमेरिका में सब प्राइम संकट आया था। वह इसी सट्टेबाजी का ही तो नतीजा था। सट्टेबाजी के लाजमी नतीजे के तौर पर बैंकों सहित विभिन्न आर्थिक प्रतिष्ठान दिवालिया होते जा रहे हैं। फिर पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ की रक्षा करने वाली सरकार संकट से उबारने के लिए सरकारी खजाने से जनता के पैसों से पूँजीपतियों को राहत पैकेज दे रही है। देखा जा रहा है कि औद्योगिक उत्पादन बढ़ाकर, नए कल-कारखाने लगाकर रोजगार के अवसर पैदा करने की क्षमता पूँजीवाद की आज नहीं बची है। अमेरिका जैसे विकसित पूँजीवादी देशों की अगर नहीं रहे तो क्या अन्य किसी पिछड़े या विकासशील पूँजीवादी देश की रहेगी? क्या रोजी-रोटी देने की उनकी क्षमता रह सकती है?

कृषि का भी यही हाल है। औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि दर घटती रहने से कृषि उत्पादन या प्राकृतिक सम्पदा संग्रह करने की कोई मांग नहीं रहती है। क्योंकि उद्योगों को कच्चा माल सप्लाई करती है कृषि। जब उद्योग ही नहीं रहें तो कृषि भी नहीं। ऐसे में लोगों का जीवन निर्वाह किस तरह होगा इसका खयाल रखने में पूँजीवाद आज असमर्थ है। नतीजतन, एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के हर पूँजीवादी देश में ही 90-95% लोगों के जीवन में घोर अनिश्चितता व्याप्त है। तथाकथित औद्योगिक तौर पर उन्नत देशों में भी आज लोगों की आर्थिक सुरक्षा नहीं है। हर जगह काम की तलाश में खानाबदोशों की तरह लोग दर दर घूमते फिर रहे हैं। कई जिन्दा रहने का रास्ता न मिलने पर अनैतिक रास्ते पर जीवन जीने के रास्ते की ओर झुकते जा रहे हैं। चोर, डकैत, राहजनों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। एक ऐसा माहौल तैयार हो गया है कि कौन किसको किस तरह ठग कर जिन्दा रह सकता है। यूरोप, अमेरिका के हर देश में ही नारियाँ आज भोग-विलास की चीज हैं। दुनिया का पहला समाजवादी देश रूस बेरोजगारी की समस्या का पूर्ण उन्मूलन करने में सक्षम हुआ था। लेकिन आज वहाँ पूँजीवाद दोबारा फिर वापस आ जाने पर पूँजीवादी व्यवस्था की सब बुराइयाँ जनता को लील रही हैं। हजारों हजार लड़कियाँ आज देह बेचने के लिए यूरोप के विभिन्न देशों में भटकती फिर रही हैं क्योंकि जिन्दा रहने का कोई साफ-सुथरा रास्ता वे अपने देश में खोज नहीं पा रही हैं। आर्थिक संकट की घोर स्थिति में भी सिर्फ उच्च ज्ञान-संस्कृति रहने से ही कोई आदमी तड़पते-तड़पते मर तो सकता है लेकिन अनैतिक काम नहीं करता। इस संस्कृति की चर्चा-साधना कहाँ हो रही है?

देश के आर्थिक संकट की तीव्रता कितनी व्यापक है यह तो सरकार द्वारा बिठाई गई अर्जुन सेन कमेटी की रिपोर्ट से ही दिखाई दे रही है। यह रिपोर्ट कहती है कि देश के 77% लोगों का सामर्थ्य रोजाना 20 रुपए से ज्यादा खर्च करने का नहीं है। जबकि चावल, दाल सहित सभी अत्यावश्यक चीजों के दाम रोजाना बढ़ रहे हैं। अति मामूली किस्म के चावलों का दाम भी 25-30 रुपए प्रति किलोग्राम है। लोग जिन्दा कैसे रहेंगे। बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। वास्तव में सच है, पूर्ण बेरोजगारों, अर्धबेरोजगारों और लगभग बेरोजगारों को मिलाकर जनसंख्या के ज्यादातर हिस्से के पास सही सही मायने में कोई काम नहीं है। कहीं कोई नया उद्योग लगता नजर नहीं आता है। राऊरकेला, दुर्गापुर, बोकारो के इन सब स्टील प्लाँटों में 30-40 हजार से भी ज्यादा मजदूरों को नौकरी मिली थी, आज वैसे बड़े उद्योग कहाँ लग रहे हैं? राष्ट्रीय क्षेत्र में तेल, भिलाई स्टील प्लाण्ट जैसे सरकारी उद्योगों में 40-50 हजार कर्मचारी नियुक्त हुए थे। आज इस तरह के उद्योग लगने तो दूर की बात, 50-100 लोग नियुक्त हो सकें ऐसी इण्डस्ट्री भी तो नहीं लगती दिखाई दे रही है। बल्कि इके-दुक्के जो उद्योग लग रहे हैं वे भी आजकल बहुत उच्च तकनीक वाले हैं। वास्तव में उनमें ज्यादा मजदूरों की जरूरत नहीं है। जिस कारखाने में कई हजार मजदूर काम करते थे उनमें मामूली सी संख्या में कुछ मजदूर रख कर बाकियों को किस तरह नौकरी से निकाला जाए पूँजीपति इस फिराक में हैं। स्थाई मजदूर आज कहने पर लगभग कोई नहीं हैं, सब ठेके पर लगे मजदूर हैं। शिक्षक, अध्यापक, डाक्टर सब क्षेत्रों में ठेके के आधार पर नियुक्तियाँ चल रही हैं। इसका मायने क्या है? इसका मायने है कि किसी भी पल नौकरी चली जा सकती है। फिर चली जाने पर आन्दोलन करने और संगठन बनाने का अधिकार भी नहीं है। पूँजीपतियों ने वह भी छीन लिया है। रेल से लेकर सभी सरकारी क्षेत्रों में सरकार ने जो सब नौकरियाँ सृजित की थीं, उन सब क्षेत्रों में छंटनी, कर्मचारियों की संख्या में कटौती जारी है।

देश की पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के इस तीव्र संकट ने राजनैतिक क्षेत्र में जिस अस्थिरता को पैदा किया है उसके विभिन्न पहलुओं का जिक्र करते हुए कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा कि बुर्जुआ लोकतंत्र की एक मूल बात थी चुनाव अबाध और स्वतंत्र होंगे। जो पार्टी बहुमत प्राप्त करेगी वही पार्टी सरकार गठित करेगी। लेकिन भारत में देखा जा रहा है कि बार-बार अल्पमत वाली पार्टी ही सरकार चला रही है। यह क्या साबित करता है? यह साबित करता है कि किसी भी पार्टी का राजनैतिक स्थायित्व नहीं रहा है। मौजूदा सरकार भी अल्पमत की सरकार है। यह 3-4 सदस्य नहीं लगभग सौ से ज्यादा सदस्य कम होने से अल्पमत में है। लेकिन लगभग तानाशाह की तरह शासन कर रही है। वह जनता पर आए दिन चोट कर रही है। नए-नए टैक्सों का बोझ थोप रही है। जनता की आर्थिक सुयोग-सुविधाओं में कटौती कर रही है। पैट्रोल-डीजल के रेटों, रेल किराए-भाड़ों आदि में बेतहाशा बढ़ोतरी कर रही है। सरकारी क्षेत्र के शिल्पोद्योगों और सेवाओं का सारा का सारा क्षेत्र निजी पूँजी के हाथों में सौंप रही है। सब जगह बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने आकर पहले ही मजदूरों की संख्या में जबरदस्त कमी कर दी है। नतीजतन, लाखों लाख लोग बेरोजगार हो रहे हैं। केन्द्रीय सरकार 'मनरेगा' के तहत साल के 365 दिन में से केवल 100 दिन काम देने की बात कर रही है। वह भी कितने लोगों को कितने दिन मिल पा रहा है? केन्द्रीय सरकार कह रही है कि दो रुपए किलोग्राम के रेट पर हर महीने 7 किलो चावल देगी। सरकार 7 किलोग्राम चावल देकर राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा बिल (नेशनल फूड सिक्युरिटी बिल)लाने की

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. असित भट्टाचार्य का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

बात कर रही है। महीने में 7 किलोग्राम चावल देने से खाद्य की सुरक्षा देगी, यह सब तो सिर्फ झांसा ही है। देश के काम करने में सक्षम लोग मेहनत-मजदूरी करके जीवन यापन करना चाहते हैं। उनके रोजगार की कोई व्यवस्था न करके सिर्फ 100 दिन का काम, 7 किलोग्राम चावल की दान-दक्षिणा की बात करके उनके स्वस्थ स्वाभाविक जीवन को ही ये असंभव बना दे रहे हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्हें भिखमंगा, घटिया भी बनाने पर तुले हुए हैं।

दूसरी तरफ, पूँजीपति वर्ग की पार्टियाँ लगातार टूटती जा रही हैं, फिर नई कुछ पार्टियाँ बनती जा रही हैं। राजनैतिक स्थिरता नहीं है। क्यों नहीं है? मूल कारण आर्थिक संकट है। जनजीवन में आर्थिक संकट की तीव्रता जितनी बढ़ती जा रही है, राजनतिक पार्टियाँ उतनी ही जनता के विक्षोभ से रूबरू होती जा रही हैं। चुनाव में एक पार्टी दूसरी पार्टी पर दोषारोपण करके सत्ता पर काबिज होने की कोशिश कर रही है। सत्ताधारी पार्टी को जनता दूसरी बार वोट नहीं देना चाहती है। इस स्थिति में पूँजीपति वर्ग की साजिश है कि जनता के विक्षोभ के रूबरू हुई पार्टी को हटाकर दूसरी पार्टी को सामने ले आए। एक पार्टी दूसरी के खिलाफ कहेगी, जनता से झूठे वायदे करेगी। पूँजीपति वर्ग पत्र-पत्रिकाओं, टी.वी. चैनलों, रेडियो के जरिए समस्त प्रचार तंत्र की मदद से जनता को गुमराह करके वोट गिरवा कर नई पार्टी को सत्ता में बिठा देगा। सत्ता में बैठते ही वह पार्टी भी उसी तरह काम करेगी, उसी तरह पूँजीपतियों के स्वार्थ की रक्षा करेगी और जनता को कंगाल-बदहाल करेगी। इसी तरह पूँजीपतियों का यह खेल, छल-फरेब चल रहा है। कांग्रेस, बीजेपी, बीएसपी, समाजवादी पार्टी ये सब वोट बटोरू पार्टियाँ तो पूँजीपतियों की जानी-पहचानी पार्टियाँ हैं ही। आर्थिक सवालों पर इनके बीच क्या फर्क हैं? पूँजीपति वर्ग की स्वार्थ रक्षा करने और जनता का दम घोंट कर मार डालने के मामले में इनमें कोई भी फर्क नहीं है। तमिलनाडू में करूणानिधि के शासनकाल और जयललिता के शासनकाल में जनता की हालत में क्या कोई फर्क पड़ा है? ऐसे में देखिए, एक शक्तिशाली प्रचार तंत्र की मदद से पूँजीपति वर्ग ने जनता को कैसे गुमराह कर दिया है। उपयुक्त राजनैतिक चेतना नहीं रहने के कारण जनता इनके असली चरित्र को नहीं पहचान पाती है, इनके ही झूठे प्रचार से गुमराह होकर दुश्मन को ही दोस्त मान लेती है और उन्हें सत्तारूढ़ होने में मदद करती है। यह है भारत की चल रही राजनीति का उत्कट रूप। नैतिक गिरावट आए दिन बढ़ती जा रही है। उसी के साथ-साथ बढ़ते जा रहे हैं चोरी, डकैती, छीना-झपटी, भ्रष्टाचार, घोटाले और ठगी के मामले।

यह जो शारदा चिट फण्ड काण्ड हुआ, इस तरह की घोर शातिर अपराधी, लोगों को ठगने वाली कम्पनियाँ कोई एक-दो नहीं, देश में शारदा चिट फण्ड जैसी सैकड़ों कम्पनियाँ हैं। दिन दहाड़े ठग कर लाखों लाख लोगों की कष्ट कमायी के धन का अधिकांश ये सब घोटालेबाज कम्पनियाँ सरकार की छत्रछाया में ही हड़प रही हैं। सरकार की नाक के नीचे सरकार को हाथ में लेकर वे जनता को तरह-तरह से प्रलोभन देती हैं। 20 रुपयों को तीन महीने में 300 रुपए कर देने का लोभ दिखाती हैं। घोर गरीबी और अज्ञानतावश जनता इनके फन्दे में पैर रख देती है। इस तरह जनता को वे लूट रही हैं और उस पैसे का हिस्सा मन्त्रियों और अफसरशाहों के बीच बंट जाता है। हर गाँव-शहर में घर-घर में चिट फण्ड का यह हमला चल रहा है और सबसे ज्यादा गरीब लोग इसके शिकार हो रहे हैं।

इस संकट से सिर्फ आर्थिक क्षेत्र ही नहीं, बल्कि राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र भी अछूता नहीं है। रोटी-कपड़ा-मकान शिक्षा स्वास्थ्य आदि अत्यन्त ज्वलन्त समस्याओं को पीछे छोड़कर बलात्कार के खतरे ने भारत के तमाम राज्यों की जनता की नीन्द हराम कर दी है। देखिए इस समस्या ने कितना वीभत्स रूप ले लिया है। डेढ़ वर्ष की बच्ची के साथ पिता बलात्कार करता है। पाँच वर्ष की लड़की को सामूहिक बलात्कार करके मार दिया जाता है। इस तरह की जघन्य घटनाएं हर घण्टे घट रही हैं। इस मामले में एक किसी व्यक्ति विशेष को दोषी ठहराना बड़ी बात नहीं है। बलात्कार तो समाज के आदिम स्तर में होता नहीं था। यहाँ तक कि पशु पक्षियों के बीच भी बलात्कार नहीं होता है। लेकिन आज केवल भारत में ही नहीं, पूरी दुनिया में बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं। यह क्या दर्शाता है? समाज में मनुष्य की नैतिकता का कितना अद्यःपतन हो जाने से इस तरह की जघन्य घटना घट सकती है यह आप अन्दाजा लगा सकते हैं। इस अद्यःपतन के लिए आज विज्ञान के युग में किसी अतिप्राकृतिक सत्ता को जिम्मेदार ठहराना क्या चल सकता है? विशेष घटना का विशेष कारण होता है। उसे खोजने का रास्ता हमें विज्ञान दिखाता है। इस विज्ञान को हथियार बनाकर ही देखा जा सकता है कि पूँजीवाद आदमी का न केवल आर्थिक शोषण करता है बल्कि इन्सानियत को भी बिल्कुल खत्म कर देता है। यह चेतावनी महान कार्ल मार्क्स ने 1848 में दी थी। मूल्यबोध, नीतिबोध, आदर्शबोध, सौन्दर्यबोध सभी कुछ को ही पूँजीवाद खत्म कर दे रहा है। इन्सान को जानवर बनाने की चौतरफा कोशिश जारी है। शिक्षा संकुचित की जा रही है, शिक्षा के नाम पर कुशिक्षा, यौन शिक्षा दी जा रही है। आदमी को यौनता का निकृष्टतम दास बनाया जा रहा है। इसका कारण भी वही है – ताकि पूँजीवाद के खिलाफ संघर्ष करने वाला कोई आदमी न रहे, संगठित आन्दोलन गठित न हो, ताकि पूँजीवाद की दुश्मन के तौर पर पहचान करा देने और पूँजीवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी सिद्धान्त समझा देने में सक्षम एक भी आदमी न रहे।

भारत समेत दुनिया के तमाम पूँजीवादी देशों में मौजूद एक और महत्वपूर्ण पहलू के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा कि सामाजिक जीवन में संकट ही संकट नहीं है। इसके विपरीत भी यानी 'एण्टी थीसिस' भी मौजूद हैं। हर देश के पूँजीपतियों का अन्याय-अत्याचार, शोषण-जुल्म हर पल जितना बढ़ता जा रहा है, उसके खिलाफ प्रतिवादमुखी मानसिकता भी पैदा होती जा रही है। अमेरिका से लेकर यूरोप के विभिन्न देशों में लोग अपनी-अपनी समझ के मुताबिक परिस्थिति का प्रतिविधान चाहते हुए सड़कों पर उतर कर आन्दोलन कर रहे हैं। वहाँ युद्ध के नाम पर करोड़ों करोड़ डॉलर खर्च करने के खिलाफ आवाज उठ रही है। ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, ग्रीस, जर्मनी, इटली सभी देशों में आर्थिक अनिश्चितता के खिलाफ, सरकारी हितलाभों, सुविधाओं में कटौती के खिलाफ रोजाना सड़कों पर आन्दोलन चल रहे हैं। अरब, मध्य पूर्व के देशों में भी लोग परिवर्तन की माँग करते हुए सड़कों पर उतर रहे हैं। सभी देशों में चुनाव में आर्थिक सवाल ही मुख्य मुद्दा बनता जा रहा है, पूँजीवादी शोषण में सब कुछ गवाँ चुके आम आदमी बचने का रास्ता कहीं खोज न लें –इसे लेकर पूँजीपति बेचैन हो उठे हैं। विश्वव्यापी यह जो परिवर्तन की चाह विक्षोभ आन्दोलन के जरिए फूट पड़ रही है, चाहे जिस भी रूप में हो, निस्संदेह यह अंधेरी रात के खात्मे की आशाभरी रूपाली रेखा है। हालाँकि इन आन्दोलनों की विभिन्न सीमाबद्धताएं तो हैं ही। ऐसी बात नहीं है कि इनमें से सभी आन्दोलन जनवादी मूल्यबोध के आधार पर गठित हो रहे हैं। जनता के इस जमा हुए विक्षोभ-आक्रोश को शासक मण्डली अलगाववाद, साम्प्रदायिकता, गोष्ठी-संघर्ष आदि भड़का कर धूर्तता के साथ विपथगामी कर डालने की कोशिश कर रही है। आम लोग गुमराह होकर भ्रातृघाती झगड़ों में भी लिप्त हो जाते हैं। यह पूँजीपति वर्ग की खतरनाक साजिश है। आसाम का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि लम्बे अर्से से बोड़ो, राभा, हिन्दू-मुस्लिम, तथाकथित बांग्लादेशियों के खिलाफ आसाम में जो संघर्ष जारी है, आन्दोलन जारी है वह सही रास्ते पर व सही मांगों पर नहीं हो रहा है, यह बात सही है। लेकिन ये गोष्ठी संघर्ष हों या तथाकथित बांग्लादेशी नागरिकों के ही खिलाफ हो, उसका मूल कारण आर्थिक अनिश्चितता है। पूँजीवादी शोषण की तीव्रता बढ़ने के साथ-साथ लोग बचने के तकाजे से, अपने-अपने स्वार्थ की चिन्ता से जब लड़ाई लड़ना चाहते हैं तभी उन्हें विपथगामी कर एक समुदाय को दूसरे किसी समुदाय के खिलाफ रक्तरंजित संघर्ष में उतार दिया जा रहा है। ये साबित कर रहा है कि आर्थिक चिन्ता लोगों को बैठे रहने नहीं दे रही है। आज राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में यही आलम है।

इस संकटमय परिस्थिति का खात्मा किस रास्ते होगा, इस बारे में विस्तार से चर्चा के प्रसंग में कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने कहा कि आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक–सभी क्षेत्रों में इस संकट का मूल कारण पूँजीवाद है। किस तरह पूँजीवाद इस संकट का कारण है यह चिन्हित कर उसे निर्मूल करने की तैयारी करना हर देश में हर क्रान्तिकारी का फर्ज है। हर देश के लोग इस शोषण-उत्पीड़न को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं, जिन्दा रहने के लिए कोई रास्ता न मिल पाने पर बेचैन हो उठे हैं। कोई औलाद की हत्या करके आत्महत्या कर रहा है, कोई गले में फाँसी लगा ले रहा है। वहीं फिर कुछ संगठित होकर प्रतिवाद करने की कोशिश कर रहे हैं और सही रास्ता न पाने पर गलत निशाना साध रहे हैं। यानी वर्ग दुश्मन तय करने में उनसे गलती हो रही है। देश-देश में उत्पीड़ित लोगों का जिन्दा रहने का यह संघर्ष किस रास्ते पर निर्मित होगा, संघर्ष का वैचारिक आधार क्या होगा, यह विज्ञान सम्मत ढंग से तय करने की जरूरत है। आज के दिनों की सबसे वैज्ञानिक विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर ही वह गठित करना होगा। उसके लिए जरूरत है मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर देश-देश में सही कम्युनिस्ट पार्टी निर्मित करना और उसके नेतृत्व में जनता को संगठित करके सचेत जनसंघर्ष, वर्ग-संघर्ष चलाते हुए क्रान्तिकारी जन उभार की जमीन तैयार करना। इस रास्ते पर विभिन्न देश की पूँजीवादी राजसत्ता उखाड़ फेंककर समाजवादी राज्य व्यवस्था कायम करने के जरिए ही मौजूदा इस असहनीय हालात का खात्मा मुमकिन है। जनता को यह समझना होगा कि वोट के जरिए यह बदलाव नामुमकिन है। हर व्यक्ति खुद की समझ के मुताबिक मौजूदा हालात के बदलाव की कामना कर रहा है। लेकिन बदलाव के सही रास्ते और हालात की सही समझ उनमें पैदा करनी होगी। यानी वह समझ जनता के पास ले जानी होगी। इस सर्वव्यापक ज्ञान चर्चा-साधना का एक माहौल पैदा करना होगा, एक नए आदर्श को जन्म देना होगा जिसके जरिए लोग असली सच्चाई खोज पाएंगे।

भारत की सरजमीं पर छोटी-बड़ी, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय सभी बुर्जुआ पार्टियाँ तो हैं ही, नकली मार्क्सवादी पेटी-बुर्जुआ पार्टियाँ भी आज बेरोकटोक पूँजीपति वर्ग की स्वार्थ रक्षा के लिए सदा सजग प्रहरी की तरह काम कर रही हैं। इसके विपरीत एकमात्र एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद-कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा के आधार पर देश के हर राज्य में किसी प्रतिकूलता की जरा भी परवाह न करते हुए निर्भीक ढंग से हालात को बदलने के लिए फौलादी इन्सान की तरह खड़ी है। वास्तव में ही इस आकांक्षित परिवर्तन के अनुकूल परिवेश भी आए दिन तैयार हो रहा है। प्रतिदिन देश के विभिन्न राज्यों में उन्नतमना, हृदयवान, मेधावी लड़के-लड़कियाँ, छात्र-नौजवान, कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन के प्रति चुम्बक की तरह आकर्षिक होते जा रहे हैं। कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा बताए संघर्ष के तौर तरीके का अनुसरण करते हुए जहाँ भी संघर्ष गठित होता है, वहीं पूँजीवाद की पक्षधर बुर्जुआ पार्टियाँ कांप उठती हैं। वे हमारी पार्टी को अलग-थलग कर पीस डालने के लिए एकजुट होने की कवायद कर रही हैं। पूँजीवाद का अन्याय-अत्याचार जहाँ बढ़ रहा है, वहीं उसके विपरीत कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के जरिए क्रान्ति का सूर्योदय भी हो रहा है। देश के अन्दर यह संघर्ष जितना तेज होगा, जितना ताकतवर होगा, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी उसका उतना ही प्रभाव पड़ेगा। इसी जरूरत को समझ कर देश की सरजमीं पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) को मजबूत करने के लिए हर एक को अपनी सृजनशील क्षमता को पूरा प्रयोग करके आगे आने का कॉमरेड असित भट्टाचार्य ने पुरजोर आह्वान किया।

ऐतिहासिक 24 अप्रैल ने हमारे लिए यही सीख दी—सही क्रान्तिकारी नेतृत्व को मजबूत करें

—कॉ. माणिक मुखर्जी

(28 अप्रैल को हैदराबाद, आंध्र प्रदेश में पार्टी का 65वां स्थापना दिवस मनाने के अवसर पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी द्वारा दिए गए भाषण को थोड़ा सम्पादित करके यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है—सम्पादक स.दृ.)

कॉमरेड सभापति, कॉमरेड्स और दोस्तो,

सबसे पहले मैं यह कहूँगा कि 24 अप्रैल न केवल हमारे लिए बल्कि एसयूसीआई(सी) से सम्बन्धित हर किसी के लिए, सभी सर्वहाराओं के लिए, देश के मजदूर किसानों के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। इसी दिन हमारे प्रिय नेता, शिक्षक और पथ-प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने 5-6 क्रान्तिकारी सहयोद्धाओं के साथ मिल कर एक लम्बे समाजवादी संघर्ष के बाद इस देश की सरजमीं पर सही कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। अपनी सत्योपलब्धि के बाद वे समझ पाए थे कि हालाँकि उस समय कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया नामधारी पार्टी थी, पर यह कम्युनिस्ट पार्टी बिल्कुल नहीं थी। यह एक सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी थी। यह भी आप जानते हैं कि एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के बिना पूँजीवाद-विरोधी क्रान्ति नहीं हो सकती जिसके बिना लोगों को असली मुक्ति नहीं मिल पाएगी।

भारत में आजादी से पहले हम ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के खिलाफ लड़े थे। उस लड़ाई में दो आकांक्षाएं थीं, दो नेतृत्व थे जो आपस में गुंथे हुए थे। एक थी जनता की आकांक्षा, इसमें ये सोचा गया था कि एक बार ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को देश से बाहर खदेड़ दिया गया तो लोगों के लिए राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक सर्वव्यापी आजादी का रास्ता खुल जाएगा। दूसरी तरफ, भारतीय राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग की आकांक्षा भी आजादी आन्दोलन में थी और वे भी ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकना चाहते थे ताकि यह वर्ग विशाल भारतीय बाजार पर काबिज हो सके और इसे नियंत्रित कर सके। यह आकांक्षा उनमें प्रतिफलित हुई जो आजादी आन्दोलन की अगुआई करने में हावी हो गए, जैसे गांधी के नेतृत्व और कांग्रेस में प्रतिफलित हुई।

उसी समय आजादी आन्दोलन के नेतृत्व में दो धाराएं थीं। एक थी उक्त गांधी का नेतृत्व जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई में समझौतापरस्त था; नेतृत्व की दूसरी धारा में शामिल थे देश के समझौताहीन क्रान्तिकारी। दो आकांशाएं रखनेवाले इन दोनों नेतृत्वों के बीच, अन्ततः गांधी की रहनुमाई में कांग्रेसी नेतृत्व ने दूसरे नेतृत्व को मात दे दी। हम राजनैतिक रूप से आजाद हो गए लेकिन असली आजादी नहीं मिल पाई।

कॉमरेड्स, तब अगर भारत में एक सही कम्युनिस्ट पार्टी होती, तो ज्यादातर लोगों की आकांक्षा, जो अंग्रेजों के खिलाफ लड़े, यहाँ तक कि अपनी जान तक भी दी उनकी आकांक्षा पूरी की जा सकती थी। यह वह समय था जिस समय अगर एक सही कम्युनिस्ट पार्टी होती तो संघर्ष की अगुआई करने के लिए इस नेतृत्व के तहत एक राष्ट्रीय मोर्चा बनाया जा सकता था। यह वह समय था जब हम इस ब्रिटिश साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन को एक सर्वहारा क्रान्ति में तब्दील कर सकते थे; उसी तरह से जिस तरह माओ त्से तुंग के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने किया था। भारत की जनता की बदनसीबी है कि भारत में कोई सही कम्युनिस्ट पार्टी नही थी जो इस ऐतिहासिक कार्य को उस मंजिल तक ले जा सके।

इन सब बिन्दुओं का विश्लेषण करने के बाद जब वे जेल में ही थे, कॉमरेड शिवदास घोष ने फैसला लिया कि एक नई पार्टी, एक सही कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना होगी। वे कॉमरेड लेनिन की इस सीख से मार्गदर्शित थे कि एक सही कम्युनिस्ट पार्टी के बिना, एक सही विचाराधारा के बिना क्रान्ति नहीं हो सकती। एक सर्वहारा क्रान्ति को सफल होने के लिए यह जरूरी है। उसके बाद से उन्होंने एक सही कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का अपना ऐतिहासिक कठिन संघर्ष शुरू किया जिससे हमारे कॉमरेड बखूबी वाकिफ हैं। लेकिन भारत के आम लोग शायद अभी इस बात से अनजान हैं कि कैसे कॉमरेड ने अपने मुट्ठीभर क्रान्तिकारी सहयोद्धाओं के साथ मिलकर एक ऐसे संघर्ष की अगुआई की जो चरित्र में बेमिसाल था। कॉमरेड शिवदास घोष ने खुद से कहा: मुझे नहीं मालूम कि मैं एक पार्टी बना पाऊँगा या नहीं, पता नहीं लोग मेरा समर्थन करेंगे या नहीं। मैं भलेही सड़क पर मर जाऊँ पर अगर मैं सत्यवादी हूँ, अगर मेरा संघर्ष सही है, तो एक दिन आएगा जब लोग उस परचम को उठाएंगे जिसे मैं बुलन्द करना चाहता था। पार्टी आगे बढ़ेगी।

आज हम पाते हैं कि एसयूसीआई(सी) एक बड़ी पार्टी है; पूरे भारत भर में हमारे कॉमरेड है, कमेटियाँ हैं और हम जनसंघर्ष और वर्ग संघर्ष गठित कर रहे हैं। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि भारत के बाहर भी कॉमरेड शिवदास घोष का नाम आज विख्यात है। वहाँ लोग उनके विचारों की कद्र कर रहे हैं जैसा कि मैं और मेरे अन्य कॉमरेड हमारे व्यक्तिगत अनुभवों से निष्कर्ष निकाल पाए हैं।

कॉमरेड्स, मैं इस खास सवाल, नेतृत्व के सवाल पर जोर दे रहा हूँ। सही नेतृत्व के बिना, आप कोई सफल आन्दोलन नहीं कर सकते, मंजिल पर नहीं ले जा सकते। अमेरिका, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, ग्रीस जैसे विकसित साम्राज्यवादी देशों में आज जो स्थिति है उस पर नजर डालें। यह विश्वास किया जाता था कि इन विकसित देशों में क्रान्ति करना बहुत मुश्किल होगा। यह कि तीसरी दुनिया के देशों में लोग पहले आगे आएंगे और क्रान्ति सम्पन्न करेंगे और फिर अमीर साम्राज्यवादी देशों का मजदूर वर्ग क्रान्तिकारी संघर्ष में उठ खड़ा होगा। ऐसा इसलिए माना जाता था कि इन बड़े साम्राज्यवादी देशों के शासक पूरी दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों व श्रम शक्ति का बेरहमी से शोषण-दोहन करके, दूसरे देशों के लोगों का खून का आखिरी कतरा तक निचोड़ करके धन के अम्बार लगा रहे हैं और फिर इस लूट के धन में से थोड़ी सी खैरात अपने-अपने देश के लोगों को दे रहे हैं। इससे उन्होंने सोच लिया था कि वे लोगों को सन्तुष्ट रख पाएंगे, कम से कम वे तथाकथित शान्ति और सद्भाव कायम कर पाएंगे और उनके देशों में क्रान्ति नहीं होगी लेकिन वे पूरी तरह गलतफहमी में थे।

अमेरिका में भी जैसा कि आप जानते हैं हाल ही में वॉल स्ट्रीट पर कब्जा करो नामक एक जोरदार आन्दोलन हुआ। इस आन्दोलन में शामिल होने वालों ने नारा दिया: 'हम पूँजीवाद नहीं चाहते, हम समाजवाद चाहते हैं। हम 99% हैं और वे 1%। और इस देश के ये संघर्षशील लोग अपनी मीटिंगों को सम्बोधित करने के लिए हमारी पार्टी को बुला रहे हैं। क्यों? इसलिए कि कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन की अपील से वे परिचित हो गए हैं। अमेरिका में मेरे दौरों के दौरान मुझे यह अहसास हुआ है। वहाँ हालात बदल रहे हैं। लेकिन फिर भी उन देशों में सही कम्युनिस्ट पार्टी, सही नेतृत्व कायम करने की समस्या से ये आन्दोलन अभी भी ग्रस्त हैं। आकण्ठ कर्ज में डूबा हुआ एक के बाद दूसरा देश दिवालिया होता जा रहा है; लोग वहाँ असहाय हैं। इन सब देशों में हजारो-हजार दुखिया लोग सड़कों पर स्वतःस्फूर्त प्रदर्शन कर रहे हैं, समस्याओं से निजात पाना चाह रहे हैं। लेकिन उनकी अगुआई कौन करेगा, वह सही नेतृत्व कहाँ है? मिस्र में काहिरा के एक दौरे के समय जब तहरीर चौक पर हुए विशाल आन्दोलन में शिरकत करने वाले लोगों के बुलावे पर मैं वहाँ गया था तो मैने उनसे कहा था : 'आप लोग एक शानदार लड़ाई लड़ रहे हैं लेकिन आपने अगर एक सही क्रान्तिकारी नेतृत्व कायम नहीं किया तो आन्दोलन आधा अधूरा रह जाएगा, यानी आप मंजिल पर नहीं पहुँच पाएंगे।' आज वही हो रहा है। इस आन्दोलन का फायदा अब कट्टरपंथी उठा रहे हैं। हमें दोबरा फिर आने का अनुरोध किया गया है।

इसलिए कॉमरेड्स, हमें कॉमरेड शिवदास घोष की यह सीख लोगों तक पहुँचानी होगी कि जब आप किसी हमले का विरोध कर रहे हों, किसी आन्दोलन में भाग ले रहे हों, तो आपकों यह जाँचना-परखना होगा कि उस आन्दोलन को उसकी मंजिल-ए-मकसूद तक कौन ले जा सकता है। बहुत अर्सा पहले उन्होंने इस तरफ ध्यान आकर्षित किया था और इस बात को अत्यन्त महत्व दिया कि क्रान्ति करने और शोषण के जुए से निजात पाने के लिए आन्दोलन पर सही कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व कायम करना अत्यावश्यक है। यह सवाल पूरी दुनिया भर में आज सर्वप्रमुख बना हुआ है। हर जगह या तो नेतृत्व का संकट है या सही नेतृत्व है तो उसकी पर्याप्त ताकत नहीं है। इसलिए सभी आन्दोलन चरित्र में स्वतःस्फूर्त होते जा रहे हैं; न कि सही ढंग से संगठित या मार्गदर्शित। पूँजीवादी दुनिया का संकट इतना गंभीर है कि वे अपने-अपने देश की अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर कतई नहीं ला पा रहे हैं। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था मरणासन्न हालत में है। यह अपनी मृत्यु वेदना से छटपटा रही है। हर जगह लोग अपनी आवाज बुलन्द कर रहे हैं और वे लड़ने को तैयार हैं। लेकिन वे सही नेतृत्व की तलाश में हैं।

कॉमरेड्स, हाल ही में मैंने तुर्की के इस्तांबुल में एक साम्राज्यवाद-विरोधी विचार गोष्ठी में भाग लिया था। वहाँ एक क्रान्तिकारी ग्रुप, भूमिगत पार्टी है। तुर्की की सरकार देश में किसी क्रान्तिकारी गतिविधि या नेतृत्व की इजाजत नहीं देती है। पिछले साल जब मैं वहाँ गया तो एक मुस्लिम महिला सभा की तमाम कार्रवाई का संचालन कर रही थी। इस बार भी मुझे उम्मीद थी कि वे ही यह काम करेंगी लेकिन वे मुझे नजर नहीं आईं। जब मैंने पूछा तो मुझे बताया गया कि सरकार के खिलाफ भाषण देने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था और केवल इतना ही नहीं, उसके साथ क्रूरता से बलात्कार भी किया गया। यह है यूरोपीय देशों, तथाकथित विकसित देशों का तजुर्बा। हमारे देश के अखबारों में आपको ये खबरें नहीं मिलेंगी। मैंने उन्हें बताया कि भारत में हमारे बहुत सारे कॉमरेड, बहुत सारी महिलाएं हैं जिन्होंने नन्दीग्राम-सिंगूर आन्दोलनों में शिरकत की थी। उनके साथ बलात्कार किए गए और जेल में ठूंस दिया गया। उनके घरों को जला दिया गया, सम्पत्ति को नष्ट कर दिया गया। हमारा पूर्व विधायक प्रबोध पुरकैत झूठे मनगढ़ंत इल्जाम में अभी भी जेल में हैं। 1950 के दशक में किसान आन्दोलन में भाग लेने वाली अनेक महिलाओं के साथ बलात्कार किए गए थे। क्या आपको इन सब बातों की जानकारी है? उसी तरह हम भी नहीं जान पाते कि तथाकथित सभ्य देशों में क्या हो रहा है।

इस तरह, जैसा कि कॉमरेड घोष ने दिखाया था कि क्रान्ति की वस्तुगत परिस्थिति न केवल हमारे देश में बल्कि पूरी दुनिया भर में पक कर पूरी तरह तैयार है। लेकिन मनोगत परिस्थिति के परिपक्व होने के सन्दर्भ में मुख्य समस्या है, यानी पर्याप्त ताकत के साथ सही क्रान्तिकारी पार्टी के उभरने की है। अगर ये दोनों मिल जाएं तो क्रान्ति दूर नहीं है।

यहाँ भारत में आप जानते हो कि कोई नौकरी नहीं हैं, बेरोजगारी की समस्या बड़ी जबरदस्त है। किसानों को उनकी जमीनों से बेदखल किया जा रहा है और वे आप्रवासी मजदूर बनते जा रहे हैं और पूरी दुनिया भर में दो वक्त की रोटी के लिए दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं। मध्यम वर्गीय महिलाएँ, निम्न-मध्यम वर्गीय महिलाएं, किसान समुदाय की महिलाएं अपने बच्चों का पेट भरने के लिए देह व्यापार में धकेली जा रही हैं। दूसरी तरफ, चन्द मुट्ठी भर भारतीय अरबपति हैं। उनके नाम अखबारों और पत्रिकाओं में बड़ी वाहवाही के साथ छपते हैं।

हमारे देश में भी नेतृत्व की समस्या है। लोग लड़ने के लिए आगे आ रहे हैं, लेकिन उनको नेतृत्व कौन देगा? कांग्रेस, बीजेपी, मुलायम की पार्टी, लालू यादव की पार्टी, सीपीआई, सीपीआई(एम) ये सब समझौतापरस्त ताकतें हैं और शासक दमनकारी भारतीय बुर्जुआ वर्ग की

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण

(पृष्ठ 5 का शेष)

मदद कर रही है। पश्चिम बंगाल में ममता बैनर्जी यह नारा देकर सत्ता में आई थी कि वे सीपीआई(एम) का मुकाबला करेंगी और आन्दोलन का झण्डा बुलन्द करेंगी। अब आप देख सकते हैं कि क्या हो रहा है। हमने बार-बार लोगों को बताया था कि हमने सिर्फ एक ही बिन्दु पर ममता बैनर्जी का समर्थन किया था, वह था, सीपीआई(एम) नेतृत्व द्वारा किए गए फासीवादी हमलों से जनवादी जनआन्दोलन को बचाना। हमने कभी नहीं सोचा था कि ममता बैनर्जी कोई आन्दोलन की ताकत है। अब वे लोग भी घोटालों में संलिप्त और घोटालेबाजों से सम्बन्धित पाए गए हैं। उनके कुछ नेता करोड़ों रुपए बना रहे हैं। आपने देखा यह सब अखबारों में छपा है। ये ताकतें लोगों का नेतृत्व कर रही हैं। इसलिए हमारे कॉमरेडों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं से लैस हों और जनता में जाएं, उन्हें संगठित करें, शिक्षित करें और प्रेरित करें ताकि वे आगे आपके आन्दोलनों में शामिल हो सकें और सही नेतृत्व को चुन सकें।

हमें अपने युवा लोगों को बताना चाहिए कि हम भारतीय नवजागरण की महान हस्तियों, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, खुदीराम बोस, भगत सिंह, अश्फाक उल्ला और अन्यों के उत्तराधिकारी हैं। उन सब ने देश की आजादी और इसकी जनता के लिए अपनी जान कुर्बान की थी। अगर हम उन तक पहुँच सके और कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं को उनके सामने व्याख्या करके समझा सके तो निश्चय ही हमारे युवा इसका प्रत्युत्तर देंगे और फिर आगे आएंगे।

कॉमरेड्स, मैं तुर्की में बुल्गारिया की तीन सिनियर लेडीज से मिला। बुल्गारिया पहले एक समाजवादी देश था। मेरे भाषण के बाद वे मेरे पास आई और मुझ से कुछ बातें की। मैने कहा : क्या आप व्याख्या करके बता सकती हैं कि आपका समाजवाद क्यों विफल हुआ और प्रतिक्रान्ति क्यों हुई? उन्होंने कहा : हमने यह कभी सोचा भी नहीं था, यह अकल्पनीय था। तब मैंने उन्हें बताया कि हमारे नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने सीपीएसयू की 20वीं कांग्रेस के समय जब खुश्चेव सत्ता में आया तभी साफ कह दिया था कि खुश्चेव संशोधनवाद की बाढ़ ला देगा यानी वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद को तिलांजलि दे रहा है और संशोधनवाद की तरफ मुड़ रहा है। यह सुनकर उन्होंने कहा : क्या ऐसी बात है? मैंने कहा : हाँ, मैं आपको वह किताब दिखा सकता हूँ। उन्होंने कहा : आप हमारे देश में आइए, हम दोबारा फिर समाजवाद निर्मित करने की कोशिश कर रहे हैं। यह आसान संघर्ष नहीं है। लेकिन लोग बहुत विक्षुब्ध हैं; उनके लिए रोजी-रोटी नहीं है, नौकरी के लिए दूसरे यूरोपीय देशों में जा रहे हैं और बहुत सी जवान औरतें देह बेचने के लिए दूसरी जगह जा रही हैं। उन तीनों में से एक महिला वस्तुतः रो रही थी : हमने क्या खो दिया, हमें कभी मालूम नहीं था। उन्होंने हमारी पार्टी को आमन्त्रित करने की इच्छा जताई। बहुत सारे लोग हमें बुला रहे हैं। हमें खेद है कि हम विभिन्न कारणों से इन सब बुलावों को स्वीकार कर पाने में असमर्थ हैं। वरना हम दुनिया के कोने-कोने में पहुँच सकते थे और कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन को फैला सकते थे। उनकी शिक्षाएँ उन लोगों की मदद कर सकती हैं क्योंकि उनमें असली क्रान्तिकारी विचारों और मार्गदर्शन का अभाव है।

इसलिए हमारे पास सबसे ताकतवर हथियार है। वह है कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा। हम और सिर्फ हम ही आज भारत में क्रान्ति सफल कर सकते हैं। यह यकीनन सच है विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए भी। दुनिया के बहुत से कम्युनिस्ट नेताओं के द्वारा अब मान लिया गया है कि कॉमरेड शिवदास घोष आधुनिक संशोधनवाद का चरित्र चित्रण करने वाले पहले नेता थे, पायनियर थे। वे ऐसे चिन्तनकार हैं जिनसे हमें आधुनिक संशोधनवाद के रोग का निदान सीखना है। भारतीय क्रान्ति के काम को पूरा करना हमारा लाजिमी फर्ज बनता है। साथ ही, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी होने के नाते हमें अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन और लोगों के क्रान्तिकारी संघर्षों की मदद भी करनी चाहिए।

कॉमरेड्स, हमें कड़ा संघर्ष करना है। हमें अपने आप से सवाल करना चाहिए : जैसे कॉमरेड शिवदास घोष हम से चाहते थे क्या हम वैसे लड़ने को तैयार हैं? क्या हम वर्ग, पार्टी और क्रान्ति के हित के साथ अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को विलय करने के लिए प्रयत्न करके असली क्रान्तिकारी बनने के लिए उन्नत क्रान्तिकारी चरित्र हासिल करने के लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं? वह संघर्ष हमने पार्टी के अन्दर अपने व्यक्तिगत जीवन में छेड़ा हुआ है। इस तरह से हम क्रान्ति को मजबूत करेंगे और इस ताकत के साथ अगर हम लोगों के पास, मेहनतकश जनता के पास जाएं, क्रान्ति के लिए उन्हें नेतृत्व दें, संगठित करें तो आज हम आशान्वित हैं कि क्रान्ति दूर की बात नहीं रहेगी। अगर पर्याप्त शक्ति के साथ सही क्रान्तिकारी नेतृत्व उभर कर आ जाए और जनता को नेतृत्व दे तो क्रान्ति बहुत करीब है। अतः 24 अप्रैल की उसी मूल सीख पर जोर देते हुए मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ कि सही क्रान्तिकारी पार्टी का गठन, सही क्रान्तिकारी नेतृत्व नितांत जरूरी है जिसके बिना हम जनआन्दोलनों और वर्ग संघर्षों का नेतृत्व नहीं कर सकते और उन्हें उनके संजोए हुए लक्ष्य तक, परिणति पर नहीं पहुँचा सकते और पूँजीवाद को नहीं उखाड़ सकते।

इन सीखों और हमारे सामने जो काम हैं उनके मद्देनजर हम प्रतिबद्ध हैं, हम आगे बढ़ेंगे और हमें पक्का यकीन है कि जीत हमारी ही होगी। आप सब कामरेडों और यहाँ मौजूद सभी लोगों को धन्यवाद।

कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

मार्क्सवाद-लेनिनवाद जिन्दाबाद

मिड डे मील वर्कर

(पृष्ठ 1 का शेष)

प्रबंध करने की माँगों पर ऑल इण्डिया यूटीयूसी से सम्बन्धित मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन के बैनर तले 11 जून को यहाँ लघुसचिवालय पर रोष प्रदर्शन किया और उपायुक्त, भिवानी की मार्फत प्रधानमंत्री, भारत सरकार के नाम एक ज्ञापन सौंपा।

शहर में प्रदर्शन करती हुई मिड डे मील कार्यकर्ता लघु सचिवालय पहुँची। पुलिस द्वारा रोक दिया जाने पर वहाँ गेट पर जुलूस सभा में बदल गया। यूनियन की नेत्री राजबाला ने कहा कि स्कूली बच्चों के लिए दोपहर का खाना बनाने वाली मिड डे मील कार्यकर्ता सरकारी स्कीम के तहत सरकारी स्कूलों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। वे स्कूल लगने के समय काम पर आती हैं और स्कूल की छुट्टी होने पर घर वापस जाती हैं। वे रोजाना 8 घण्टे काम करती हैं। इसलिए कोई दूसरा काम करने का भी समय उन्हें नहीं मिलता है। इतनी कड़ी मेहनत करने पर भी उन्हें 1000 रुपये मासिक मानदेय मिलता है जो काफी कम है जिसका भुगतान कई-कई महीने तक नहीं किया जाता है। छुट्टियों के दौरान मिड डे मील कुक-कम-हैल्परों के पैसे काटे जाते हैं। रोजाना लगभग 30 रुपये मानदेय के इतने कम पैसों में आज की इस आकाशछूती महंगाई में उनके परिवार का गुजारा नहीं होता है। गुजारेलायक मेहनताना देना तो दूर की बात रही, खुद सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम वेतन या मनरेगा के तहत दिये जाने वाले वेतन जितना मानदेय भी सरकार उन्हें नहीं देती है। हाजिरी रजिस्टर में नाम, मासिक बंधे वेतन, महंगाई के हिसाब से सालाना बढ़ोतरी, जीवन बीमा, भविष्य निधि, ग्रेच्युटी, पेन्शन, वर्दी, सवेतन अवकाश, बीमार पड़ने पर इलाज आदि सामाजिक सुरक्षा उपायों व सुविधाओं से भी वे वंचित हैं। उनकी नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं है। उनका जीना मुश्किल हो गया है। वे काम तो सरकारी करती हैं लेकिन सरकार उन्हें अपना कर्मचारी ही नहीं मानती है। आई.एल.सी. में ट्रेड यूनियनों द्वारा दिये गये सुझावों व पार्लियामेन्टरी कमेटी की सिफारिशों को लागू करना केन्द्र व राज्य सरकारों की जिम्मेदारी बनती है। लेकिन उनके प्रति केन्द्र व राज्य सरकार का रवैया घोर निराशाजनक, संवेदनहीन और बेरुखा है। सभा को ऑल इण्डिया यूटीयूसी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल, जिला कमेटी सदस्यों कॉ. राजकुमार व धर्मवीर सिंह ने सम्बोधित किया। मिड डे मील कार्यकर्ताओं से अपनी मांगों के लिए आन्दोलन तेज करने का आह्वान करते हुए कॉ. रामफल ने कहा कि आन्दोलन के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है।

प्रदर्शन में दर्शना, निर्मला, कमलेश, संतोष, रेखा, आशा, चंद्रकला, मीना, मंजू आदि काफी मिड डे मील कार्यकर्ता शामिल थी।

महिलाओं की समस्याओं पर सम्मेलन

बहादुरगढ़ (हरियाणा): गत दिनों यहां ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन के बैनर तले सेक्टर-6 में महिला सम्मेलन में महिलाओं की समस्याओं पर, खासकर दिन प्रतिदिन बढ़ते रेप और गैंग रेप के कारणों तथा अन्य अत्याचारों पर विचार विमर्श किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सोना आर्य ने की तथा मंच संचालन सरोजनी दी ने किया। संगठन की दिल्ली प्रदेश सचिव तथा ऑल इण्डिया कमेटी की सदस्य कॉमरेड रितु कौशिक ने कहा कि सख्त कानून बनने के बाद भी महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों में कोई कमी नहीं आई है। हर घण्टे काफी बलात्कार की घटनाएं देश भर में हो रही हैं। चार-पांच साल की बच्चियों पर भी अमानवीय कुकृत्य हो रहे हैं। यह बहुत ही घिनौनी व शर्मनाक बात है। उन्होंने कहा कि मनुष्य जानवर के स्तर से भी नीचे गिरता जा रहा है। इसका मुख्य कारण टीवी व फिल्मों के माध्यम से परोसी जा रही अश्लीलता है। नारी देह को उपभोग की वस्तु के रूप में दर्शाया जा रहा है। नशाखोरी को बढ़ावा दिया जा रहा है। हर जगह शराब के ठेके खोले जा रहे हैं। इसका असर महिलाओं पर बढ़ते अपराध के रूप में देखा जा रहा है। सोना आर्य ने कन्या भ्रूण हत्या, बालिका हत्या, दहेज हत्या तथा घरेलू हिंसा पर गहरी चिन्ता जताते हुए कहा कि महिलाएं घर-बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। विवेकशील महिलाओं व पुरुषों को इन बुराइयों के खिलाफ उठ खड़े होना होगा। वहीं सरोजनी देवी ने कहा कि अपराध की शिकार अधिकतर गरीब महिलाओं को न्याय नहीं मिलता, केस दर्ज नहीं होते हैं, अदालती कार्रवाई में समय ज्यादा लगता है, केस उठाने का दबाव बना रहता है, गवाह तोड़ लिए जाते हैं, सही धाराएं नहीं लगाई जाती हैं, पुलिस का रवैया ठीक नहीं है। वहीं लक्ष्मी बाई ने नशाखोरी, रूढ़िवाद व पुरुषप्रधान मानसिकता पर अपने विचार रखे व संगठन बनाने व संघर्ष की बात कही।

शहीद प्रीतिलता वाद्देदार के जन्म दिवस पर खेल प्रतियोगिताएं व जनसभाएं

दिल्ली : एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा आजादी आन्दोलन की प्रथम महिला शहीद प्रीतिलता वाद्देदार का 102वां जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर 10 मई को बृज विहार में जन सभा और महिलाओं की खेल प्रतियोगिता आयोजित की। जनसभा को एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल ने सम्बोधित किया। उन्होंने महिलाओं से आह्वान किया कि वे शहीद प्रीतिलता वाद्देदार के जीवन-संघर्ष से सीख लेकर वर्तमान में महिलाओं और बच्चों पर बढ़ते हुए अत्याचारों के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करने का संकल्प लें। उनके अलावा सभा को एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक तथा सचिवमण्डल सदस्य कॉ. सीता सिंह ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन कॉ. स्मिता सिन्हा ने किया। गुलाबीबाग के सैण्ट्रल पार्क में महिलाओं की खेल प्रतियोगिता और सभा हुई। सभा को मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल के अलावा कॉ. जसबीर कौर, श्री कुलबीर सिंह तथा कॉ. ऋतु कौशिक ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि शहीद प्रीतिलता वाद्देदार जयंती मनाने का असली उद्देश्य तभी पूर्ण होगा जब हम उन जैसे शहीदों के जीवन से सीख लें और महिलाओं व बच्चों पर बढ़ते अपराधों के विरुद्ध चलाए जा रहे आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेंगे। मुकुन्दपुर में की गई सभा को कॉ. ऋतु कौशिक तथा कॉ. सुनीता ने सम्बोधित किया। सोनिया विहार में जनसभा एवं खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभा को अध्यक्ष कॉ. अर्चना शर्मा, सचिव कॉ. पुष्पा चमोली तथा कॉ. ऋतु कौशिक ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन कॉ. संगीता यादव ने किया। साकेत में हुई सभा को एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य उपाध्यक्ष एडवोकेट दीपिका जैन, सचिव ऋतु कौशिक, सचिव मण्डल सदस्य सीता सिंह व बासमती देवी ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर प्रीतिलता वाद्देदार की फोटो और उद्धरण प्रदर्शनी का भी आयोजन किया।

उपजाऊ जमीन छीनकर निजी कम्पनियों को देने की साजिश के खिलाफ

बिहार में खगड़िया के किसान संघर्ष की राह पर

सूबे बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्ववाली जदयू-भाजपा की सरकार सुशासन, न्याय के साथ विकास आदि लोक लुभावन नारों के साथ किसानों की तरक्की एवं खुशहाली के लिए कृषि रोड मैप जैसी योजनाओं की बात करती नहीं थकती है। जबकि सच्चाई यह है कि राज्य का मंत्री-विधायक-अफसरशाह गठजोड़ प्रशासनिक ताकत के बल पर अपनी ही सरकार के मान्य नियमों-कानूनों की धज्जियां उड़ा रहा है।

खगड़िया जिले के मानसी में किसानों से बासगीत व उपजाऊ जमीन छिनकर निजी कंपनियों को सौंपने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। मानसी में ग्रोथ सेंटर के नाम पर 1986-87 में बियाडा (बिहार इंडस्ट्रियल एरिया डेवलपमेंट ऑथोरिटी) के तहत जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया प्रारंभ हुई। लेकिन अधिग्रहण संबंधी प्रक्रिया में पायी गयी त्रुटियों और किसानों के विरोध के चलते 2008 में ही बियाडा के निदेशक के के पाठक एवं खगड़िया समाहर्ता मयंक बड़बड़े ने अधिग्रहण की प्रक्रिया को निरस्त करने का आदेश दे दिया। बावजूद इसके भूमि अधिग्रहण संबंधी कानून 11ए और बियाडा निदेशक के के पाठक तथा समाहर्ता मयंक बड़बड़े के आदेशों को अंगूठा दिखाते हुए भू-अर्जन पदाधिकारी, खगड़िया द्वारा किसानों के भू-स्वामित्व समाप्त करने संबंधी तुगलकी फरमान जारी कर दिया गया; क्योंकि, बिहार के सत्तासीन राजनेताओं द्वारा संरक्षित कम्पनी प्रीस्टाइन लोजिस्टिक्स इन्फ्राप्रोजेक्ट्स प्रा. लि. (PLIPL) को जमीन पर हर हाल में कब्जा दिलाना है। जबकि खुटिया मानसी गौड़ा के किसान अपनी पुश्तैनी बासगीत और उपजाऊ जमीन को बचाने के लिए कटिबद्ध होकर उपजाऊ भूमि बचाओ संघर्ष समिति के बैनर तले 'जान देंगे लेकिन जमीन नहीं देंगे' के बुलंद नारों के साथ संघर्षरत हैं। किसानों के आंदोलन को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) सहित अन्य वामपंथी-जनवादी दलों ने समर्थन दिया है। पिछले 11 मार्च, 2013 को प्रसिद्ध समाजसेवी एवं मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित डा. संदीप पाण्डेय, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के वरिष्ठ नेता अरूण कुमार सिंह, सीपीआई के पूर्व विधायक सत्य नारायण सिंह सहित विभिन्न वामपंथी-जनवादी दलों के नेताओं ने संघर्षशील किसानों के साथ खुटिया से खगड़िया समाहरणालय तक आयोजित प्रतिवाद मार्च में भाग लिया और मार्च के उपरांत आयोजित प्रतिवाद सभा में आंदोलन के प्रति एकजुटता का इजहार किया। इधर प्रशासन एवं प्रीस्टाइन कम्पनी के गुंडों द्वारा किसानों पर लगातार आधे दर्जन से अधिक बार कातिलाना हमले किये जा चुके हैं, जिनमें गंभीर रूप से घायल दर्जन भर किसानों में तीन किसान व एक 75 वर्षीया महिला महीनों से पटना मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में चिकित्साधीन हैं। नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तारी-कार्रवाई की बात पर जिला प्रशासन चुप्पी साधे हुए है। इतना ही नहीं, बल्कि कम्पनी बिना विज्ञापन निकाले नौकरी देने का झांसा देकर हजारों बेरोजगार किसानों से लाखों रुपये दिन दहाड़े ठग रही है। ठगी के शिकार भोले-भाले बेरोजगारों को उन्मादी बनाकर, भड़काकर जमीन रक्षार्थ संघर्षरत किसानों पर जानलेवा हमला करवाने में इस्तेमाल कर रही है। जिला प्रशासन को उक्त घटनाक्रम की लिखित जानकारी देने के बावजूद ठगों, हमलावरों पर किसी तरह की कार्रवाई नहीं हुई है।

ऐसी स्थिति में अन्यायपूर्ण व गैर कानूनी तरीके से किसानों की जमीन पर कब्जा करने पर रोक लगाने, प्रीस्टाइन कम्पनी द्वारा नौकरी देने जैसे काले कारनामे की जांच कर कार्रवाई करने, किसानों पर जानलेवा हमला करने वाले नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तार करने, आंदोलनकारियों पर से झूठे मुकदमे वापस लेने, किसानों के भूखंड से प्रीस्टाइन कम्पनी का शिविर हटाने, उपजाऊ भूमि बचाओ संघर्ष समिति के संयोजक कमल किशोर यादव सहित अन्य गिरफ्तार आंदोलनकारियों को अविलम्ब रिहा करने आदि मांगों पर 6 जून को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) सहित सर्वदलीय समिति, खगड़िया के विभिन्न घटक दलों और उपजाऊ भूमि बचाओ संघर्ष समिति के संयुक्त बैनर तले खगड़िया जिलाधिकारी के समक्ष एक दिवसीय महाधरना दिया गया। महाधरना की अध्यक्षता सीताराम राय ने की और संचालन एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) नेता जितेन्द्र कुमार ने किया। महाधरना को सीपीआई के पूर्व विधायक सीताराम सिंह, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के वरिष्ठ नेता कॉमरेड अरूण कुमार सिंह व राज्य कमिटी सदस्य कॉमरेड इन्द्रदेव राय सहित विभिन्न दलों के नेताओं ने संबोधित किया। कॉमरेड अरूण कुमार सिंह ने किसानों को राजनेता-नौकरशाह-औद्योगिक माफिया गठजोड़ की गैरकानूनी व अन्यायपूर्ण तरीके से किसानों की उपजाऊ भूमि छीनने की साजिशों के खिलाफ बंगाल के नंदीग्राम-सिंगुर के किसानों के बहादुराना संघर्ष की तर्ज पर आंदोलन को और जोरदार व जुझारू बनाने का आह्वान किया। अंत में प्रतिनिधि मंडल ने जिला समाहर्ता को 7 सूत्री मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा।

कॉ. रंजीत धर का भाषण

(पृष्ठ 2 का शेष)

अभी भाजपा के साथ जाना संभव नहीं है। आज इन पार्टियों की राजनीति में क्रांति कहीं नहीं है। ये पार्टियाँ अब क्रांति को लेकर सोचती भी नहीं हैं। ये सिर्फ इतना सोचती हैं कि क्या करने से, किसके साथ गठजोड़ करने से लोकसभा या विधान सभा में कुछ सीटे प्राप्त हों। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) संसदीय सत्ता के पीछे नहीं भाग रही है, येन-केन प्रकारेण एमएलए या एमपी बनाना हमारा लक्ष्य नहीं है। जन आन्दोलन के जरिये कोई सीट जीती जाये तो वह बात अलग है। लेकिन दलाली करके, सुविधावादी रास्ते से, किसी सत्ताधारी पार्टी के साथ गठजोड़ करके एमएलए या एमपी पाने का रास्ता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) का नहीं है। यह पार्टी जन आंदोलन की राह पर रही है। जहाँ कहीं भी जनता समस्या में है, वहीं कॉ. शिवदास घोष द्वारा निर्मित एकमात्र एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) जन समस्याओं को लेकर आंदोलन के मैदान में कूद पड़ती है। फिर भी देशव्यापी आन्दोलन खड़ा करने की ताकत अभी हम हासिल नहीं कर पाये हैं। इसलिए इस पार्टी को जल्दी से मजबूत करने की जरूरत है।

यह पार्टी सर्वहारा वर्ग की पार्टी है। यह एक नयी किस्म की पार्टी है। यह एक नये तरह का संघर्ष चल रहा है। सर्वहारा वर्ग की पार्टी के जो कार्यकर्ता हैं, उनका पहला काम है सर्वहारा वर्ग की संस्कृति को अपनानना। जो मजदूर क्रांति चाहते हैं, उन्हें पहले खुद को बदलना होगा। पूँजीवादी समाज में जो व्यक्तिवादी मानसिकता, व्यक्तिवादी संस्कृति, व्यक्तिकेन्द्रित चाहत है, उसे बदलना होगा। सामाजिक स्वार्थ के आधार पर संस्कृति आत्मसात करनी होगी। हम किन पहलुओं से पीछे हैं? जितनें नेता-कार्यकर्ता होने से हम क्रांतिकारी आन्दोलन में जनता को नेतृत्व दे सकते हैं, उतने हम तैयार नहीं कर पाये हैं। हमारे नेता-कार्यकर्ताओं का एक हिस्सा सर्वहारा संस्कृति हासिल करने के संघर्ष में उल्लेखनीय भूमिका निभाने पर भी, अनेक ऐसे हैं जो व्यक्तिगत चाहत, व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा आदि पूँजीवादी संस्कृति के बदले सर्वहारा संस्कृति, सामूहिक सोच आदि अपनाने का संघर्ष सही तरीके से नहीं कर पा रहे हैं। अगर हम सर्वहारा संस्कृति नहीं अपना सकें, तो हम सर्वहारा वर्ग की पार्टी नहीं बना पायेंगे। चीन में माओ-त्से तुंग के नेतृत्व में सर्वहारा क्रांति होने के बाद भी उसका पतन हो गया। उसका कारण है व्यक्तिवादी संस्कृति, बुर्जुआ संस्कृति। सुधारवाद उसे ही कहते हैं जब सर्वहारा वर्ग के अंदर बुर्जुआ चिंतन, बुर्जुआ संस्कृति घुस जाते हैं। बुर्जुआ चिंतन प्रक्रिया जब किसी कम्युनिस्ट पार्टी में आ जाती है, तभी सुधारवाद-संशोधनवाद पैदा होता है, तभी उसका पतन होता है। सर्वहारा वर्ग की पार्टी का चरित्र फिर उसका नहीं रहता है। अगर व्यक्तिवादी संस्कृति रह जाये, तो हम सामाजिक स्वार्थ की चाहे जितनी भी बातें करें, हमारे आचरण में, हमारे कामकाज में व्यक्तिवादी चिंतन, व्यक्तिवादी आचार-विचार रह ही जायेगा। तब नाम से तो सर्वहारा वर्ग की पार्टी रहेगी, लेकिन उसका चरित्र सर्वहारा वर्ग का नहीं रहेगा।

वर्तमान पूँजीवादी समाज में लगभग हर परिवार के अंदर ही व्यक्तिवाद अपनी गहरी पैठ बना चुका है। आज एक पिता-संतान का संबंध, भाई-भाई का संबध, भाई-बहन का संबंध, यहां तक कि पति-पत्नी का संबंध रुपये-पैसों के लेन-देन पर निर्भर कर रहा है। तुमने कितना दिया, हमने कितना दिया, तुमने कितना किया, हमने कितना किया-इस हिसाब-किताब के आधार पर संबंध बन रहा है। किसी घर-परिवार में सुख-चैन नहीं है। समाज में, परिवार में जो स्नेह, ममता, प्यार था, वह खत्म होता जा रहा है। पिता देख रहा है कि उसने अपने बेटे के बारे में जैसा सोचा था, वह वैसा नहीं बन रहा है। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे से अलग-थलग कटा हुआ है, अकेला है।

आज पूँजीवाद ने समाज को इस जगह ला खड़ा कर दिया है। यह समाज घोर व्यक्तिवादी चिंतन के आधार पर चल रहा है। इस समाज से ही नेता-कार्यकर्ता पार्टी में आते हैं, क्रांति करने के अरमान लेकर ही आते हैं। लेकिन उनमें भी व्यक्तिवाद रहना स्वाभाविक है। इसलिए उन्हें सर्वहारा संस्कृति, सामूहिक संस्कृति को अपनाने की अत्यंत जरूरत है। एक साथ रहना, एक साथ रहकर व्यक्तिवाद के खिलाफ संघर्ष करना निहायत जरूरी है। कॉ. शिवदास घोष ने नेताओं-कार्यकर्ताओं के साथ इकट्ठे रहते हुए पार्टी कम्यून में अपना जीवन बिताया था।

आज जो परिस्थिति हमारे सामने है, वह काफी संभावनापूर्ण है। पूँजीवाद चौतरफा संकट से घिरा हुआ है। वह ताकत के पहलू से भी काफी कमजोर हो गया है। बाहर से देखने पर लगता है वह काफी ताकतवर है लेकिन असल में अंदरखाने यह बहुत ही कमजोर हो गया है। इसलिए पूँजीवाद-साम्राज्यवाद के बारे में माओ-त्से तुंग ने कहा था कि यह कागजी बाघ है। एक धक्का देने से यह गिर जायेगा। धक्का देने की वह ताकत आप में होनी चाहिए। जनता के अंदर जो विक्षोभ जमा हो गया है, सर्वहारा राजनीति के आधार पर अगर उसे संगठित किया जा सके और कॉमरेड शिवदास घोष की सीख के आधार पर अगर पार्टी के तमाम नेता-कार्यकर्ता सर्वहारा संस्कृति को अपना सकें, सामूहिक चिंतन के आधार पर चल सकें-तभी वर्तमान परिस्थिति में परिवर्तन होगा। क्रांति के लिए समाज तैयार है, क्रांति के लिए राजनीति भी हमारे पास है। अब पार्टी के हर नेता-कार्यकर्ता जनता के बीच ही रहें। जन आन्दोलन गठित करें। तब क्रांति बहुत दूर नहीं रहेगी। कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने देहांत के पहले कहा था कि भारत की क्रांति बहुत दूर नहीं है। आज क्रांति और भी नजदीक आ गयी है। सिर्फ हमारी तैयारी में कमी है। कॉ. शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर उस कमी को दूर करने का संकल्प अगर आज हम लें, तो इस देश में क्रांति जल्द ही हो जाएगी।

इंकलाब जिन्दाबाद!
एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद!
कॉ. शिवदास घोष लाल सलाम!

●●●

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing :20 June, 2013

राज्य सरकार ने बढ़ाये पेट्रोल के रेट एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)ने की निन्दा

पटना : राज्य सरकार द्वारा पेट्रोल की कीमत पर 10 प्रतिशत सरचार्ज बढ़ाये जाने के फलस्वरूप पेट्रोल के दाम में प्रति लीटर 1.76 रुपये की हुई वृद्धि की तीव्र निन्दा करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉमरेड शिव शंकर ने 19 मई को जारी बयान में इसे तुरंत वापस लेने की मांग की है। कॉमरेड शिव शंकर ने कहा कि सुशासन और विकास का राग अलापने वाली जदयू-भाजपा की सरकार ने गरीबी, आवश्यक वस्तुओं की महंगाई और बेरोजगारी में हांफ रही राज्य की जनता को राहत देने की बजाय उस पर और बोझ लाद दिया है। दरअसल नीतीश सरकार आज लोक लुभावन नारों की आड़ में राज्य की पूर्ववर्ती कांग्रेस तथा राजद सरकार की तरह ही पूरी तरह से जनविरोधी हो गयी है।

कॉमरेड शिव शंकर ने राज्य की जनता से पेट्रोल की मूल्य वृद्धि तथा राज्य सरकार की अन्य जनविरोधी नीतियों के खिलाफ ताकतवर जन आंदोलन निर्मित करने की अपील की।

बलात्कार की घटनाओं के खिलाफ एआईएमएसएस द्वारा मुख्यमंत्री को ज्ञापन

इलाहाबाद (उ. प्र.) : शहर में चार दिन के भीतर चार लड़कियों के साथ बलात्कार की घटनाओं ने पूरे शहर को दहला कर रख दिया। पहली घटना में बीएससी की छात्रा को परीक्षा के लिये जाते समय बीच सड़क से कार में घसीट कर उसके साथ सामूहिक बलात्कार हुआ। दूसरी घटना कक्षा 6 में पढ़ने वाली 11 वर्ष की बच्ची के साथ उसके सगे चाचा ने बलात्कार किया। तीसरी घटना में किराएदार की 2 और 4 साल की दो बहनों के साथ मकान मालिक ने हैवानियत दिखाई। ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन और एआईडीवाईओ ने तुरन्त जिलाधिकारी को मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में शहर में बढ़ती बलात्कार की घटनाओं पर रोक लगाने की मांग की तथा इसके लिये जिम्मेदार अश्लील फिल्मों, विज्ञापनों, पोर्नोग्राफी तथा शराब की दुकानों को प्रतिबंधित करने की मांग की। इस अवसर पर रश्मि मालवीय, सुमन लता शुक्ला, सुष्मिता राय, प्रशान्त, अंकुश, अमित चौधरी, राजवेन्द्र सिंह, घनश्याम मौर्य आदि उपस्थित थे।

आन्दोलन की जीत बलात्कारियों को हुई सजा

बड़ौदा(गुजरात) : बड़ौदा के तरसाली विस्तार में गत 12 अप्रैल, 2011 को एक 13 वर्षीय बालिका के साथ दो युवकों द्वारा सामूहिक बलात्कार किया गया था। इस जघन्य अपराध का ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन(ए आई एम एस एस) की बड़ौदा जिला कमेटी की ओर से कड़ा विरोध किया गया। विरोध प्रदर्शन के साथ-साथ कलेक्टर एवं पुलिस कमिश्नर को प्रत्यक्ष ज्ञापन सौंपा गया और माननीय राज्यपाल महोदय को भी इसमें हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया गया। एआईएमएसएस की टीम द्वारा बालिका का मेडिकल चेक-अप भी कराया गया। उसकी शिक्षा पर प्रतिकूल असर न पड़े इसलिए संगठन की कुछ सदस्य प्राथमिक शिक्षा अधिकारी से भी मिली। इस प्रकार दो वर्ष के कठिन संघर्ष के बाद, जनमत के दबाव के चलते आखिर पीड़िता को न्याय मिल पाया। दोनों अपराधियों को 10-10 साल की कैद हुई, पीड़िता को 15000 रुपये मुआवजे के तौर पर दिया गया और 3000 रुपये कोर्ट ने जुर्माने के तौर पर अपराधियों से वसूल किये। इस प्रकार आन्दोलन की जीत हुई।

आईएसीसी ने तुर्की के फासिस्ट शासन के खिलाफ जनआन्दोलन के साथ अपनी एकजुटता का किया इजहार

इण्टरनेशनल एण्टी इम्पीरियलिस्ट कॉ-ओर्डिनेटिंग कमेटी (आईएसीसी) के महासचिव कॉ. माणिक मुखर्जी ने गत दिनों एक बयान जारी कर तुर्की में जनवादी मांगों को लेकर हो रहे जनवादी आन्दोलन के साथ अपनी एकजुटता का इजहार किया। शहर के केन्द्र में स्थित एक सार्वजनिक पार्क को पूँजीवादी लालच द्वारा हड़पे जाने से बचाने के लिए इस्तांबुल के आम नागरिकों ने एक विरोध प्रदर्शन के रूप में आन्दोलन शुरू किया था। लेकिन सरकार के आदेश पर पुलिस ने आसूँ गैस, वॉटर केनन, रबड़ बुलैट और डण्डों का इस्तेमाल करते हुए अभूतपूर्व पाशविकता के साथ शान्तिपूर्ण, निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर कहर बरपा दिया। कम से कम दो प्रदर्शनकारी मारे गए, हजारों घायल हुए और बहुत सारे गिरफ़्तार कर लिये गये। बिना किसी उकसावे के बावजूद की गई पुलिसिया हिंसा ने तुर्की के लोगों को आक्रोशित कर दिया। राजधानी अंकारा और अन्य शहरों में जनआन्दोलन फैल गया और पूरे देश को अपनी लपेट में ले लिया। एक ठेठ तानाशाह की तरह तुर्की के प्रधानमंत्री ने हिंसा को जायज ठहराया और प्रदर्शनकारियों पर आतंकवादी और असामाजिक तत्व होने का आरोप लगा दिया। इसने लोगों को और भी उत्तेजित कर दिया और छात्र, शिक्षक, डाक्टर, वकील, मजदूर व दूसरे तबकों के लोग सड़कों पर उतर आये। वे प्रदर्शनकारियों के साथ मिल गए जिसने एक देशव्यापी आन्दोलन का रूप ले लिया। इसके समर्थन में मजदूरों ने हड़ताल का आह्वान किया। इस घटना ने फासीवादी शासन के दमन-उत्पीड़न के खिलाफ उबल रहे असंतोष के लिए आग में घी का काम किया और आन्दोलन अधिकाधिक जन विद्रोह का चरित्र अख्तियार करता चला गया, इस हद तक कि उप प्रधानमंत्री तक को आना पड़ा, प्रदर्शनकारियों से बातचीत करनी पड़ी और घायलों से माफी मांगनी पड़ी। प्रदर्शनकारियों ने एक मांग पत्र सौंपा जिसमें तीन शहरों, इस्तांबुल, अंकारा और हताई के गवर्नरों और सुरक्षा प्रमुखों को बर्खास्त करने, गिरफ़्तार किए गए प्रदर्शकारियों को रिहा करने, पुलिस द्वारा आँसू गैस इस्तेमाल करने पर रोक लगाने तथा इस्तांबुल के तकसीम चौक में पार्क को तबाह करने के प्रोजेक्ट को तुरन्त निरस्त करने की मांग की गई। प्रधानमंत्री के अंधाधुंध, गैरजनवादी कृत्यों के लिए उनके इस्तीफे की मांग भी उठाई गई।

कॉ. मुखर्जी ने कहा कि आईएसीसी इन मांगों के प्रति अपना समर्थन और चल रहे प्रतिवाद आन्दोलन के साथ अपनी एकजुटता का इजहार करती है। लोगों की अन्तिम जीत पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ने फेंकने और तुर्की की सरजमीं पर समाजवाद कायम करने के जरिए ही हासिल की जा सकती है।

किसानों के हत्यारों को फांसी देने की मांग पर धरना

मुरादाबाद (उ.प्र.): जिला सम्भल के गम्मनपुरा गाँव में मारे गए चार बेकसूर युवा किसानों के हत्यारों को फांसी देने की मांग पर 6 जून को मुरादाबाद मण्डल, मुरादाबाद के मण्डलायुक्त कार्यालय के सामने एआईडीवाईओ के बैनर तले सैकड़ों नौजवानों व किसानों ने धरना दिया। मांगों से संबंधित पांच ज्ञापन जिलाधिकारी ने धरना स्थल पर आकर लिए और अतिशीघ्र प्रभावी कार्यवाही का आश्वासन दिया।

मृतक किसानों की विधवाओं को सरकारी नौकरी, पक्के मकान तथा बच्चों की पढ़ाई आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करने, हत्याकाण्ड के सभी अभियुक्तों को फांसी की सजा देने व मुख्य अभियुक्त अनीस को संरक्षण देने वाले राज्य मंत्री को तुरन्त मंत्रिमण्डल से बर्खास्त करने और मुकदमा चलाने, मृतकों के परिजनों पर बनाये गए सभी फर्जी मुकदमें वापिस लेने, शराब बिक्री, उत्पादन, सेवन आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने, असमौली विकास खण्ड की सभी ग्राम पंचायतों को उनकी मांग तथा सुविधानुसार पुलिस तथा राजस्व सहित तीनों जिलों में विभाजित करने, हरथला मुरादाबाद काण्ड में मजिस्ट्रेटी जांच का खुलासा करने व दोषी नेताओं को कठोर सजा देने, बिजली की दरों में की गई वृद्धि तत्काल वापिस लेने की मांग ज्ञापनों में की गई। धरने को प्रदेश उपाध्यक्ष कॉ. राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, नौबहार सिंह, नासिर अली, नवाब अली, आसिफ, रूबी खान, सोमवती शर्मा, भवदीप प्रदीप आदि ने भी सम्बोधित किया तथा संचालन कॉ. मौ. गौरी ने किया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com